अध्याय २०

शिक्षाष्टक प्रार्थनाएँ

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने अपने *अमृत-प्रवाह-भाष्य* में बीसवें अध्याय का सारांश इस प्रकार दिया है। श्री चैतन्य महाप्रभु ने स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा रामानन्द राय के साथ शिक्षाष्टक प्रार्थनाओं के अर्थ का आस्वादन करते हुए रातें बिताईं। कभी वे जयदेव गोस्वामी के *गीत गोविन्द* से श्लोक सुनाते तो कभी *श्रीमद्भागवत* से, कभी श्रीरामानन्द राय कृत *जगन्नाथ वल्लभ नाटक* से, तो कभी बिल्वमंगल ठाकुर कृत *कृष्ण कर्णामृत* से। इस तरह वे भावों में ही डूबे रहते। श्री चैतन्य महाप्रभु बारह वर्षों तक जगन्नाथपुरी में रहे और इतने काल तक वे ऐसे दिव्य श्लोक सुनाकर उनका आस्वादन करते रहे। महाप्रभु कुल मिलाकर अड़तालीस वर्षों तक इस मर्त्य जगत् में रहे। महाप्रभु के अन्तर्धान होने का संकेत करने के बाद श्री चैतन्य चरितामृत के रचनाकार ने सम्पूर्ण *अन्त्य लीला* का संक्षिप्त विवरण देते हुए अपने ग्रन्थ का समापन किया है।

प्रेमोद्भावित-हर्षेर्ष्योद्वेग-दैन्यार्ति-मिश्रितम् ।
लपितं गौरचन्द्रस्य भाग्यवद्भिर्निषेव्यते ॥ १ ॥

प्रेमोद्भावित-हर्षेर्ष्योद्वेग-दैन्यार्ति-मिश्रितम् ।
लपितं गौरचन्द्रस्य भाग्यवद्भिर्निषेव्यते ॥ १ ॥

प्रेम-उद्भावित—प्रेमावेश तथा भाव से उत्पन्न; **हर्ष**—हर्ष; **ईर्ष्या**—ईर्ष्या; **उद्वेग**—उद्वेग; **दैन्य**—दैन्य; **आर्ति**—संताप; **मिश्रितम्**—के साथ मिश्रित; **लपितम्**—उन्मत्त व्यक्ति की तरह बातें; **गौर-चन्द्रस्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भाग्यवद्भिः**—अत्यन्त भाग्यवान द्वारा; **निषेव्यते**—आस्वाद्य।

अनुवाद

केवल अति भाग्यशाली व्यक्ति ही श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रलापों का आस्वादन करेगा, क्योंकि वे हर्ष, ईर्ष्या, उद्वेग, दैन्य तथा संताप से मिश्रित हैं और सभी प्रेमावेश से उत्पन्न होते हैं।

जय जय गौरचन्द्र जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥२॥

जय जय गौरचन्द्र जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २ ॥

जय जय—जय जय; **गौरचन्द्र**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **जय**—जय हो; **नित्यानन्द**—श्री नित्यानन्द प्रभु की; **जय**—जय हो; **अद्वैत-चन्द्र**—अद्वैत आचार्य की; **जय**—जय हो; **गौर-भक्त-वृन्द**—श्री चैतन्य महाप्रभु के भक्तों की।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! श्री नित्यानन्द प्रभु की जय हो! श्री अद्वैत चन्द्र की जय हो तथा श्री चैतन्य महाप्रभु के समस्त भक्तों की जय हो!

एई-मत महाप्रभु वैसे नीलाचले ।
रजनी-दिवसे कृष्ण-विरहे विह्वले ॥३॥

एइ-मत महाप्रभु वैसे नीलाचले ।
रजनी-दिवसे कृष्ण-विरहे विह्वले ॥ ३ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **वैसे नीलाचले**—नीलाचल में रहे; **रजनी-दिवसे**—दिन-रात; **कृष्ण-विरहे**—कृष्ण के विरह के कारण; **विह्वले**—अभिभूत।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु इस तरह से जगन्नाथ पुरी (नीलाचल) में निवास कर रहे थे, तब वे रात-दिन लगातार कृष्ण के विरह से अभिभूत रहते थे।

স্বরূপ, রামানন্দ,—এই দুইজন-সনে ।
রাত্রি-দিনে রস-গীত-শ্লোক আস্বাদনে ॥ ৪ ॥

स्वरूप, रामानन्द,—एइ दुइजन-सने ।
रात्रि-दिने रस-गीत-श्लोक आस्वादने ॥ ४ ॥

स्वरूप—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **रामानन्द**—रामानन्द राय; **एइ**—ये; **दुइ-जन-सने**—दोनों व्यक्ति के साथ; **रात्रि-दिने**—दिन-रात; **रस-गीत-श्लोक**—दिव्य आनन्द के रस से युक्त श्लोक तथा गीत; **आस्वादने**—आस्वादन करने में।

अनुवाद

वे स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा रामानन्द राय, इन दो संगियों के साथ रात-दिन दिव्य आनन्दमय गीतों तथा श्लोकों का आस्वादन करते थे।

নানা-ভাব উঠে প্রভুর হর্ষ, শোক, রোষ ।
দৈন্যোদ্বেগ-আর্তি উৎকণ্ঠা, সন্তোষ ॥ ৫ ॥

नाना-भाव उठे प्रभुर हर्ष, शोक, रोष ।
दैन्योद्वेग-आर्ति उत्कण्ठा, सन्तोष ॥ ५ ॥

नाना-भाव—सब प्रकार के भाव; **उठे**—जाग्रत होते; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **हर्ष**—हर्ष; **शोक**—शोक; **रोष**—क्रोध; **दैन्य**—दैन्य; **उद्वेग**—उद्वेग; **आर्ति**—संताप; **उत्कण्ठा**—उत्कण्ठा; **सन्तोष**—सन्तोष।

अनुवाद

वे विविध दिव्य भावों के लक्षणों यथा हर्ष, शोक, रोष, दैन्य, उद्वेग, संताप, उत्कण्ठा तथा सन्तोष का आस्वादन करते।

সেই সেই ভাবে নিজ-শ্লোক পড়িয়া ।
শ্লোকের অর্থ আস্বাদয়ে দুই-বন্ধু লঞা ॥ ৬ ॥

सेइ सेइ भावे निज-श्लोक पड़िया ।
श्लोकेर अर्थ आस्वादये दुइ-बन्धु लञा ॥ ६ ॥

सेइ सेइ भावे—उस विशेष भाव में; **निज-श्लोक पड़िया**—अपने श्लोक पढ़ते;

श्लोकेर—श्लोकों का; **अर्थ**—अर्थ; **आस्वादये**—आस्वादन करते; **दुइ-बन्धु लञा**—दो मित्रों के साथ।

अनुवाद

वे अपने बनाये श्लोक सुनाते और उनके अर्थ तथा भाव बतलाते। इस तरह वे अपने इन दो मित्रों के साथ उनका आस्वादन करके आनन्द लेते।

कोन दिने कोन भावे श्लोक-पठन ।
सेइ श्लोक आस्वादिते रात्रि-जागरण ॥७॥

कोन दिने कोन भावे श्लोक-पठन ।
सेइ श्लोक आस्वादिते रात्रि-जागरण ॥७॥

कोन दिने—कभी-कभी; **कोन भावे**—कुछ भाव में; **श्लोक-पठन**—श्लोक पढ़कर; **सेइ श्लोक**—वे श्लोक; **आस्वादिते**—आस्वादन करने के लिए; **रात्रि-जागरण**—रातभर जागते रहते।

अनुवाद

कभी-कभी महाप्रभु किसी विशेष भाव में डूब जाते और उससे सम्बन्धित श्लोक सुनाकर तथा उसका आस्वादन करते हुए रातभर जगे रहते।

हर्षे प्रभु कहेन,—"शुन स्वरूप-राम-राय ।
नाम-सङ्कीर्तन—कलौ परम उपाय ॥८॥

हर्षे प्रभु कहेन,—"शुन स्वरूप-राम-राय ।
नाम-सङ्कीर्तन—कलौ परम उपाय ॥८॥

हर्षे—हर्ष में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कहेन**—कहा; **शुन**—कृपया सुनो; **स्वरूप-राम-राय**—हे प्रिय स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा रामानन्द राय; **नाम-सङ्कीर्तन**—भगवान् के पवित्र नाम का कीर्तन; **कलौ**—कलियुग में; **परम उपाय**—मुक्ति पाने का सर्वसुलभ साधन।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने परम हर्ष में कहा, "हे स्वरूप दामोदर तथा

रामानन्द राय, तुम मुझसे जान लो कि इस कलियुग में पवित्र नामों का कीर्तन ही मुक्ति का सर्वसुलभ साधन है।

सङ्कीर्तन-यज्ञे कलौ कृष्ण-आराधन ।
सेई त' सुमेधा पाय कृष्णेर चरण ॥९॥

सङ्कीर्तन-यज्ञे कलौ कृष्ण-आराधन ।
सेइ त' सुमेधा पाय कृष्णेर चरण ॥९॥

सङ्कीर्तन-यज्ञे—हरे कृष्ण महामन्त्र के संकीर्तन का यज्ञ; **कलौ**—इस कलियुग में; **कृष्ण-आराधन**—कृष्ण की पूजा की विधि; **सेइ त'**—ऐसा व्यक्ति; **सु-मेधा**—अत्यन्त बुद्धिमान; **पाय**—पाता है; **कृष्णेर चरण**—कृष्ण के चरणकमलों में आश्रय।

अनुवाद

इस कलियुग में कृष्ण की आराधना की विधि यह है कि भगवान् के पवित्र नाम के कीर्तन द्वारा यज्ञ किया जाय। जो ऐसा करता है, वह निश्चय ही अत्यन्त बुद्धिमान है और वह कृष्ण के चरणकमलों में शरण प्राप्त करता है।

तात्पर्य

अधिक जानकारी हेतु देखें आदि लीला, अध्याय तीन, श्लोक ७७-७८।

कृष्ण-वर्णं त्विषाकृष्णं साङ्गोपाङ्गास्त्र-पार्षदम् ।
यज्ञैः सङ्कीर्तन-प्रायैर्यजन्ति हि सु-मेधसः ॥१०॥

कृष्ण-वर्णं त्विषाकृष्णं साङ्गोपाङ्गास्त्र-पार्षदम् ।
यज्ञैः सङ्कीर्तन-प्रायैर्यजन्ति हि सु-मेधसः ॥१०॥

कृष्ण-वर्णम्—*कृष्-ण* वर्णों का उच्चार करने वाले; **त्विषा**—आभा के साथ; **अकृष्णाम्**—श्याम नहीं (सुनहरी); **स-अङ्ग**—पार्षदों के साथ; **उपाङ्ग**—सेवकों; **अस्त्र**—अस्त्रों; **पार्षदम्**—विश्वस्त साथियों; **यज्ञैः**—यज्ञ द्वारा; **सङ्कीर्तन-प्रायैः**—मुख्य रूप से संकीर्तन द्वारा; **यजन्ति**—वे पूजा करते हैं; **हि**—निश्चय ही; **सु-मेधसः**—बुद्धिमान व्यक्ति।

अनुवाद

"'कलियुग में बुद्धिमान व्यक्ति निरन्तर कृष्ण नाम का गायन करने वाले ईश्वर के अवतार की पूजा करने के लिए संकीर्तन करते हैं। यद्यपि

उनका वर्ण श्याम नहीं है, तो भी वे साक्षात् कृष्ण हैं। वे अपने पार्षदों, सेवकों, अस्त्रों तथा विश्वस्त संगियों से युक्त हैं।'

तात्पर्य

यह श्लोक सन्त करभाजन द्वारा *श्रीमद्भागवत* (११.५.३२) में कहा गया है। अधिक जानकारी के लिए देखें आदि लीला, अध्याय ३, श्लोक ५२।

नाम-सङ्कीर्तन हैते सर्वानर्थ-नाश ।
सर्व-शुभोदय, कृष्ण-प्रेमेर उल्लास ॥ ११॥

नाम-सङ्कीर्तन हैते सर्वानर्थ-नाश ।
सर्व-शुभोदय, कृष्ण-प्रेमेर उल्लास ॥ ११॥

नाम-सङ्कीर्तन—भगवान् के पवित्र नाम के कीर्तन से; **हैते**—से; **सर्व-अनर्थ-नाश**—समस्त अवांछित वस्तुओं का नाश; **सर्व-शुभ-उदय**—सद्भाग्य का उदय; **कृष्ण-प्रेमेर उल्लास**—कृष्ण-प्रेम के प्रवाह का शुभारम्भ ।

अनुवाद

एकमात्र भगवान् कृष्ण के नाम का कीर्तन करने से मनुष्य समस्त अवांछित अभ्यासों से मुक्त हो सकता है। यह समस्त सौभाग्य के उदय कराने तथा कृष्ण-प्रेम की तरंगों के प्रवाह को शुभारम्भ कराने का साधन है।

चेतो-दर्पण-मार्जनं भव-महा-दावाग्नि-निर्वापणं
श्रेयः-कैरव-चन्द्रिका-वितरणं विद्या-वधू-जीवनम् ।
आनन्दाम्बुधि-वर्धनं प्रति-पदं पूर्णामृतास्वादनं
सर्वात्म-स्नपनं परं विजयते श्री-कृष्ण-सङ्कीर्तनम् ॥ १२॥

चेतो-दर्पण-मार्जनं भव-महा-दावाग्नि-निर्वापणं
श्रेयः-कैरव-चन्द्रिका-वितरणं विद्या-वधू-जीवनम् ।
आनन्दाम्बुधि-वर्धनं प्रति-पदं पूर्णामृतास्वादनं
सर्वात्म-स्नपनं परं विजयते श्री-कृष्ण-सङ्कीर्तनम् ॥ १२॥

चेतः—हृदय के; **दर्पण**—दर्पण को; **मार्जनम्**—स्वच्छ करता है; **भव**—भवसागर की; **महा-दाव-अग्नि**—महदावाग्नि; **निर्वापणम्**—बुझाता है; **श्रेयः**—सौभाग्य का; **कैरव**—श्वेत

कमल; **चन्द्रिका**—चाँदनी; **वितरणम्**—फैलाता है; **विद्या**—सर्व ज्ञान का; **वधू**—वधू; **जीवनम्**—जीवन; **आनन्द**—आनन्द के; **अम्बुधि**—सागर की; **वर्धनम्**—वृद्धि करता है; **प्रति-पदम्**—प्रत्येक पग पर; **पूर्ण-अमृत**—पूर्ण अमृत का; **आस्वादनम्**—आस्वादन करता है; **सर्व**—सब को; **आत्म-स्नपनम्**—आत्मा का स्नान; **परम्**—दिव्य; **विजयते**—विजय हो; **श्री-कृष्ण-सङ्कीर्तनम्**—कृष्ण के पवित्र नाम के संकीर्तन की।

अनुवाद

"'भगवान् कृष्ण के पवित्र नाम के संकीर्तन की परम विजय हो, जो हृदय रूपी दर्पण को स्वच्छ बना सकता है और भवसागर रूपी प्रज्ज्वलित अग्नि के दु:खों का शमन कर सकता है। यह संकीर्तन उस वर्धमान चन्द्रमा के समान है, जो समस्त जीवों के लिए सौभाग्य रूपी श्वेत कमल का वितरण करता है। यह समस्त विद्या का जीवन है। कृष्ण के पवित्र नाम का कीर्तन दिव्य जीवन के आनन्दमय सागर विस्तार करता है। यह सबों को शीतलता प्रदान करता है और मनुष्य को प्रति पग पर पूर्ण अमृत का आस्वादन करने में समर्थ बनाता है।'

तात्पर्य

यह श्री चैतन्य महाप्रभु के *शिक्षाष्टक* का प्रथम श्लोक है। अन्य सात श्लोक १६, २१, २९, ३२, ३६, ३९ तथा ४७ क्रमांक के श्लोकों के रूप में मिलेंगे।

सङ्कीर्तन हैते पाप-संसार-नाशन ।
चित्त-शुद्धि, सर्व-भक्ति-साधन-उदगम ॥१३॥

सङ्कीर्तन हैते पाप-संसार-नाशन ।
चित्त-शुद्धि, सर्व-भक्ति-साधन-उद्गम ॥ १३॥

सङ्कीर्तन हैते—पवित्र नाम के जप की विधि से; **पाप-संसार-नाशन**—पापों से उत्पन्न भौतिकतावादी जीवन का नाश; **चित्त-शुद्धि**—हृदय की शुद्धि; **सर्व-भक्ति**—सभी प्रकार की भक्ति; **साधन**—सभी प्रकार की साधना; **उद्गम**—उदय।

अनुवाद

"हरे कृष्ण मन्त्र का सामूहिक कीर्तन करने से मनुष्य संसार की

पापमय स्थिति का विनाश कर सकता है, अपने मलीन हृदय को स्वच्छ कर सकता है और सभी प्रकार की भक्ति का उदय कर सकता है।

कृष्ण-प्रेमोदगम, प्रेमामृत-आस्वादन ।
कृष्ण-प्राप्ति, सेवामृत-समुद्रे मज्जन ॥ १४॥

कृष्ण-प्रेमोद्गम, प्रेमामृत-आस्वादन ।
कृष्ण-प्राप्ति, सेवामृत-समुद्रे मज्जन ॥ १४॥

कृष्ण-प्रेम-उद्गम—कृष्ण-प्रेम का उदय; **प्रेम-अमृत-आस्वादन**—कृष्ण-प्रेम के दिव्य आनन्द का आस्वाद; **कृष्ण-प्राप्ति**—कृष्ण के चरणकमलों की प्राप्ति; **सेवा-अमृत**—सेवा के अमृत के; **समुद्रे**—सागर में; **मज्जन**—निमग्न।

अनुवाद

"कीर्तन के फलस्वरूप मनुष्य में कृष्ण-प्रेम का उदय होता है और वह दिव्य आनन्द का आस्वादन करता है। अन्ततोगत्वा उसे कृष्ण का सान्निध्य प्राप्त होता है और वह उनकी भक्ति में लग जाता है, मानो वह प्रेम के महासागर में निमग्न हो रहा हो।"

उठिल विषाद, दैन्य,—पड़े आपन-श्लोक ।
याहार अर्थ शुनि' सब याय दुःख-शोक ॥ १५॥

उठिल विषाद, दैन्य,—पड़े आपन-श्लोक ।
याहार अर्थ शुनि' सब याय दुःख-शोक ॥ १५॥

उठिल विषाद—शोक का उदय हुआ; **दैन्य**—दैन्य; **पड़े**—पढ़ा; **आपन-श्लोक**—अपना निजी श्लोक; **याहार**—जिसका; **अर्थ शुनि'**—अर्थ सुनकर; **सब**—सब; **याय**—चले गये; **दुःख-शोक**—दुःख तथा शोक।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के अन्तर में विषाद तथा दैन्य भावों का उदय हो आया और वे स्वनिर्मित दूसरा श्लोक सुनाने लगे। उस श्लोक का अर्थ सुनकर मनुष्य सारे दुःख तथा शोक को भूल सकता है।

नाम्नामकारि बहुधा निज-सर्व-शक्तिस्
तत्रार्पिता नियमितः स्मरणे न कालः ।
एतादृशी तव कृपा भगवन्ममापि
दुर्दैवमीदृशमिहाजनि नानुरागः ॥१६॥

नाम्नाम्—भगवान् का पवित्र नाम; **अकारि**—प्रकट हुए; **बहुधा**—विविध प्रकार के; **निज-सर्व-शक्तिः**—सर्व प्रकार की निजी शक्तियाँ; **तत्र**—उसमें; **अर्पिता**—भर दी हैं; **नियमितः**—नियम; **स्मरणे**—स्मरण करने में; **न**—नहीं; **कालः**—काल का विचार; **एतादृशी**—इतनी ; **तव**—आपकी; **कृपा**—कृपा; **भगवन्**—हे प्रभु; **मम**—मेरा; **अपि**—यद्यपि; **दुर्दैवम्**—दुर्भाग्य; **ईदृशम्**—ऐसा; **इह**—इस (पवित्र नाम) में; **अजनि**—उत्पन्न हुआ; **न**—नहीं; **अनुरागः**—अनुराग।

अनुवाद

"'हे प्रभु, हे पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्, आपके पवित्र नाम में जीव के लिए सर्व सौभाग्य निहित है, अतः आपके अनेक नाम हैं यथा कृष्ण तथा गोविन्द, जिनके द्वारा आप अपना विस्तार करते हैं। आपने अपने इन नामों में अपनी सारी शक्तियाँ भर दी हैं और उनका स्मरण करने के लिए कोई निश्चित नियम भी नहीं हैं। हे प्रभु, यद्यपि आप अपने पवित्र नामों की उदारतापूर्वक शिक्षा देकर पतित बद्ध जीवों पर ऐसी कृपा करते हैं, किन्तु मैं इतना अभागा हूँ कि मैं पवित्र नाम का जप करते समय अपराध करता हूँ, अतः मुझ में जप करने के लिए अनुराग उत्पन्न नहीं हो पाता है।'

अनेक-लोकेर वाञ्छा—अनेक-प्रकार ।
कृपाते करिल अनेक-नामेर प्रचार ॥१७॥
अनेक-लोकेर वाञ्छा—अनेक-प्रकार ।
कृपाते करिल अनेक-नामेर प्रचार ॥१७॥

अनेक-लोकेर—अनेक लोगों की; **वाञ्छा**—इच्छाएँ; **अनेक-प्रकार**—अनेक प्रकार

की; **कृपाते**—आपकी कृपा से; **करिल**—आपने किया है; **अनेक**—अनेक; **नामेर**—पवित्र नाम का; **प्रचार**—प्रचार।

अनुवाद

"चूँकि लोगों की इच्छाओं में विविधता है, इसीलिए आपने कृपा करके विविध नामों का वितरण किया है।

खाइते शुइते यथा तथा नाम लय ।
काल-देश-नियम नाहि, सर्व सिद्धि हय ॥ १८॥

खाइते शुइते यथा तथा नाम लय ।
काल-देश-नियम नाहि, सर्व सिद्धि हय ॥ १८॥

खाइते—खाते समय; **शुइते**—सोते समय; **यथा**—जैसे; **तथा**—वैसे; **नाम लय**—पवित्र नाम लेता है; **काल**—काल में; **देश**—स्थान में; **नियम**—नियम; **नाहि**—नहीं है; **सर्व सिद्धि हय**—सर्व सिद्धि प्राप्त करता है।

अनुवाद

"देश या काल से निरपेक्ष जो व्यक्ति खाते तथा सोते समय भी पवित्र नाम का उच्चारण करता है, वह सर्व सिद्धि प्राप्त करता है।

"सर्व-शक्ति नामे दिला करिया विभाग ।
आमार दुर्दैव,—नामे नाहि अनुराग!!" ॥ १९॥

"सर्व-शक्ति नामे दिला करिया विभाग ।
आमार दुर्दैव,—नामे नाहि अनुराग!!" ॥ १९॥

सर्व-शक्ति—सारी शक्तियाँ; **नामे**—पवित्र नाम में; **दिला**—आपने प्रदान की है; **करिया विभाग**—विभाग करके; **आमार दुर्दैव**—मेरा दुर्भाग्य; **नामे**—पवित्र नामों के जप में; **नाहि**—नहीं है; **अनुराग**—अनुराग।

अनुवाद

"आपने अपने हर नाम में अपनी पूरी शक्ति भर दी है, किन्तु मैं इतना अभागा हूँ कि मुझमें आपके पवित्र नाम के कीर्तन के प्रति कोई अनुराग नहीं है।"

যে-রূপে ল-ইলে নাম প্রেম উপজয় ।
তাহার লক্ষণ শুন, স্বরূপ-রাম-রায় ॥২০॥

য়ে-রূপে লইলে নাম প্রেম উপজয় ।
তাহার লক্ষণ শুন, স্বরূপ-রাম-রায় ॥ ২০ ॥

য়ে-রূপে—जिस विधि से; **ल-इले**—यदि कीर्तन; **नाम**—पवित्र नाम; **प्रेम उपजय**—कृष्ण का सुप्त प्रेम जाग्रत होता है; **ताहार लक्षण शुन**—उसके लक्षण सुनो; **स्वरूप-राम-राय**—हे स्वरूप दामोदर तथा रामानन्द राय।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने आगे कहा, "हे स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा रामानन्द राय, मुझसे तुम उन लक्षणों को सुनो, जिस प्रकार मनुष्य को अपने सुप्त कृष्ण-प्रेम को सुगमता से जागृत करने के लिए हरे कृष्ण महामन्त्र का कीर्तन करना चाहिए।

তৃণাদপি সু-নীচেন তরোরিব সহিষ্ণুনা ।
অমানিনা মান-দেন কীর্তনীয়ঃ সদা হরিঃ ॥২১॥

তৃণাদপি সু-নীচেন তরোরিব সহিষ্ণুনা ।
অমানিনা মান-দেন কীর্তনীয়ঃ সদা হরিঃ ॥ ২১ ॥

তৃণাত্ অপি—रास्ते पर पड़े हुए तृण से भी; **সু-নীচেন**—अधिक नीच; **তরোঃ**—वृक्ष के; **ইব**—समान; **সহিষ্ণুনা**—सहिष्णु; **অমানিনা**—मिथ्या गर्व से रहित; **মান-দেন**—सब को सम्मान देते हुए; **কীর্তনীয়ঃ**—कीर्तन करता है; **সদা**—सदैव; **হরিঃ**—भगवान् के पवित्र नाम का।

अनुवाद

"'जो अपने आपको घास से भी तुच्छ मानता है, जो वृक्ष से भी अधिक सहिष्णु है तथा जो निजी सम्मान न चाहकर अन्यों को आदर देने के लिए सदैव तत्पर रहता है, वह सदैव भगवान् के पवित्र नाम का कीर्तन अत्यन्त सुगमता से कर सकता है।'

উত্তম হঞা আপনাকে মানে তৃণাধম ।
দুই-প্রকারে সহিষ্ণুতা করে বৃক্ষ-সম ॥২২॥

उत्तम हञा आपनाके माने तृणाधम ।
दुइ-प्रकारे सहिष्णुता करे वृक्ष-सम ॥ २२ ॥

उत्तम हञा—अत्यन्त उन्नत होते हुए भी; **आपनाके**—स्वयं; **माने**—मानता है; **तृण-अधम**—धरती पर पड़े हुए तृण से भी नीच; **दुइ-प्रकारे**—दो प्रकार से; **सहिष्णुता**—सहिष्णु; **करे**—करता है; **वृक्ष-सम**—वृक्ष के समान।

अनुवाद

"ये उसके लक्षण हैं, जो हरे कृष्ण महामन्त्र का कीर्तन करता है। यद्यपि वह अति उत्तम होता है, किन्तु वह अपने आपको धरती की घास से भी तुच्छ मानता है और वृक्ष की तरह वह दो प्रकार से सब कुछ सहन करता है।

वृक्ष येन काटिलेह किछू ना बोलय ।
शुकाञा मैलेह कारे पानी ना मागय ॥ २३ ॥

वृक्ष ग्रेन काटिलेह किछु ना बोलय ।
शुकाञा मैलेह कारे पानी ना मागय ॥ २३ ॥

वृक्ष—वृक्ष; **ग्रेन**—जैसे; **काटिलेह**—जब काटा जाता है; **किछु ना बोलय**—कुछ कहता नहीं; **शुकाञा**—सूखने पर; **मैलेह**—यदि मर रहा है; **कारे**—किसी से; **पानि**—पानी; **ना मागय**—माँगता नहीं।

अनुवाद

"जब वृक्ष को काटा जाता है, तब वह कुछ बोलता नहीं है और सूखते रहने पर भी कभी किसी से पानी नहीं माँगता।

येइ ये मागये, तारे देय आपन-धन ।
घर्म-वृष्टि सहे, आनेर करये रक्षण ॥ २४ ॥

ग्रेइ ग्रे मागये, तारे देय आपन-धन ।
घर्म-वृष्टि सहे, आनेर करये रक्षण ॥ २४ ॥

ग्रेइ ग्रे मागये—यदि कोई वृक्ष से कुछ माँगता है; **तारे**—उसको; **देय**—देता है; **आपन-धन**—अपनी सम्पत्ति; **घर्म-वृष्टि**—सूर्य की तपती धूप तथा वर्षा की झड़ी; **सहे**—सहन करता है; **आनेर**—अन्यों को; **करये रक्षण**—आश्रय देता है।

अनुवाद

"वृक्ष हर किसी को अपने फल, फूल तथा जो भी उसके पास होता है, दे देता है। वह तपती धूप तथा वर्षा की झड़ी को सहन करता है, फिर भी वह अन्यों को आश्रय देता है।

উত্তম হঞা বৈষ্ণব হবে নিরভিমান ।
জীবে সম্মান দিবে জানি' 'কৃষ্ণ'-অধিষ্ঠান ॥২৫॥

उत्तम हञा वैष्णव हबे निरभिमान ।
जीवे सम्मान दिबे जानि' 'कृष्ण'-अधिष्ठान ॥ २५॥

उत्तम हञा—अत्यन्त उन्नत होने पर भी; **वैष्णव**—भक्त; **हबे**—होता है; **निरभिमान**—निराभिमानी; **जीवे**—हर एक जीव के प्रति; **सम्मान दिबे**—सम्मान देता है; **जानि'**—जानकर; **कृष्ण-अधिष्ठान**—कृष्ण का रहने का स्थान।

अनुवाद

"यद्यपि वैष्णव अत्युच्च व्यक्ति होता है, तो भी वह निरभिमानी होता है और हर एक को कृष्ण का रहने का स्थान समझकर उसका आदर करता है।

এই-মত হঞা যেই কৃষ্ণ-নাম লয় ।
শ্রী-কৃষ্ণ-চরণে তাঁর প্রেম উপজয় ॥২৬॥

एइ-मत हञा येइ कृष्ण-नाम लय ।
श्री-कृष्ण-चरणे ताँर प्रेम उपजय ॥ २६॥

एइ-मत—इस प्रकार; **हञा**—होकर; **येइ**—जो कोई भी; **कृष्ण-नाम लय**—कृष्ण के पवित्र नाम का कीर्तन करता है; **श्री-कृष्ण-चरणे**—भगवान् कृष्ण के चरणकमलों में; **ताँर**—उसका; **प्रेम उपजय**—कृष्ण-प्रेम जागृत होता है।

अनुवाद

"यदि कोई इस तरह से कृष्ण के पवित्र नाम का कीर्तन करता है, तो वह निश्चय ही कृष्ण के चरणकमलों के प्रति अपना सुप्त प्रेम जागृत कर लेगा।"

কহিতে কহিতে প্রভুর দৈন্য বাড়িলা ।
'শুদ্ধ-ভক্তি' কৃষ্ণ-ঠাঞি মাগিতে লাগিলা ॥২৭॥

কহিতে কহিতে প্রভুর দৈন্য বাড়িলা ।
'শুদ্ধ-ভক্তি' কৃষ্ণ-ঠাঞি মাগিতে লাগিলা ॥ ২৭॥

কহিতে কহিতে—इस तरह बोलते हुए; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **দৈন্য**—दैन्य; **বাড়িলা**—बढ़ गया; **শুদ্ধ-ভক্তি**—शुद्ध भक्ति; **কৃষ্ণ-ঠাঞি**—कृष्ण से; **মাগিতে লাগিলা**—प्रार्थना करने लगे।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु इस तरह बोल रहे थे, तो उनका दैन्य बढ़ गया और वे कृष्ण से शुद्ध भक्ति सम्पन्न कर पाने के लिए प्रार्थना करने लगे।

প্রেমের স্বভাব—যাহাঁ প্রেমের সম্বন্ধ ।
সেই মানে,—'কৃষ্ণে মোর নাহি প্রেম-গন্ধ' ॥২৮॥

প্রেমের স্বভাব—যাহাঁ প্রেমের সম্বন্ধ ।
সেই মানে,—'কৃষ্ণে মোর নাহি প্রেম-গন্ধ' ॥ ২৮॥

প্রেমের স্বভাব—भगवत्प्रेम का स्वभाव; **যাহাঁ**—जहाँ; **প্রেমের সম্বন্ধ**—भगवत्प्रेम का सम्बन्ध; **সেই মানে**—वह मानता है; **কৃষ্ণে**—भगवान् कृष्ण के प्रति; **মোর**—मेरा; **নাহি**—नहीं है; **প্রেম-গন্ধ**—रंच मात्र भी प्रेम।

अनुवाद

जहाँ भी भगवत्प्रेम का सम्बन्ध होता है, इसका स्वाभाविक लक्षण यही है कि भक्त अपने आपको भक्त नहीं समझता। बल्कि वह सदैव यही सोचता है कि उसमें कृष्ण के प्रति रंच मात्र भी प्रेम नहीं है।

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर की टीका है कि जिन लोगों में भगवत्प्रेम या भक्ति का लेशमात्र भी नहीं होता, वे अपने आपको बहुत बड़े भक्त के रूप में विज्ञापित करते हैं, यद्यपि वे किसी भी समय भक्ति के दिव्य आनन्द का आस्वादन नहीं कर सकते। ऐसे तथाकथित भक्तों की एक श्रेणी, जो *प्राकृत सहजिया* के नाम से विख्यात है, कभी-कभी अपना सौभाग्य प्रदर्शित करने के लिए भक्ति के लक्षण प्रकट करते हैं। किन्तु वे केवल ढोंग करते हैं,

क्योंकि ये भक्ति के लक्षण केवल बाहरी होते हैं। प्राकृत सहजिये इन लक्षणों को कृष्ण-प्रेम में अपनी तथाकथित प्रगति का विज्ञापन करने के लिए दिखाते हैं, किन्तु इन प्राकृत सहजियों के दिव्य भाव-लक्षणों की प्रशंसा करना तो दूर रहा, शुद्ध भक्तगण इनकी संगति तक नहीं करना चाहते। इसलिए प्राकृत सहजियों की शुद्ध भक्तों से तुलना करना उचित नहीं है। जब कोई सचमुच ही कृष्ण के प्रेम में प्रबुद्ध होता है, तो वह अपने आपको विज्ञापित करना नहीं चाहता, किन्तु भगवान् की अधिकाधिक सेवा करने का प्रयास करता है।

प्राकृत सहजिये कभी-कभी शुद्ध भक्तों को दार्शनिक, पंडित, सत्य के ज्ञाता या सूक्ष्म दर्शन करने वाले कहकर उनकी आलोचना करते हैं, किन्तु उन्हें भक्त नहीं कहते। इतना ही नहीं, वे अपने आपको अत्यन्त उन्नत, दिव्य आनन्दमय भक्त के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो भक्ति में डूबे हुए तथा दिव्य रस का आस्वादन करने के लिए बावले रहते हैं। वे अपने आपको स्वत:स्फूर्त प्रेम में उन्नत भक्त, दिव्य रसों के ज्ञाता, कृष्ण के माधुर्यरस में सर्वोच्च भक्त इत्यादि के रूप में वर्णित करते हैं। वे ठीक से भगवत्प्रेम की दिव्य प्रकृति को न जानते हुए अपने भौतिक भावों को प्रगति का सूचक मान बैठते हैं। इस तरह वे भक्ति की विधि को दूषित करते हैं। वे वैष्णव साहित्य के प्रणेता बनने की चेष्टा में शुद्ध भक्ति के अन्तर्गत जीवन की भौतिक अनुभूतियों को प्रविष्ट कर देते हैं। अपनी भौतिक धारणाओं के कारण वे अपने आपको दिव्य रसों के ज्ञाता के रूप में विज्ञापित करते हैं, किन्तु वे भक्ति की दिव्य प्रकृति को नहीं समझते।

न धनं न जनं सुन्दरीं
कवितां वा जगदीश कामये ।
मम जन्मनि जन्मनीश्वरे
भवताद्भक्तिरहैतुकी त्वयि ॥२९॥

न धनं न जनं न सुन्दरीं
कवितां वा जगदीश कामये ।
मम जन्मनि जन्मनीश्वरे
भवताद्भक्तिरहैतुकी त्वयि ॥ २९ ॥

न—नहीं; **धनम्**—धन; **न**—नहीं; **जनम्**—अनुयायीगण; **न**—नहीं; **सुन्दरीम्**—सुन्दर स्त्री; **कविताम्**—अलंकारिक भाषा में वर्णित सकाम कर्म; **वा**—अथवा; **जगत्-ईश**—हे जगदीश; **कामये**—मैं चाहता हूँ; **मम**—मेरा; **जन्मनि**—जन्म; **जन्मनि**—जन्मांतर; **ईश्वरे**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की; **भवतात्**—हो; **भक्तिः**—भक्ति; **अहैतुकी**—अहैतुकी; **त्वयि**—आपके प्रति।

अनुवाद

"'हे जगदीश, मुझे भौतिक सम्पत्ति, भौतिकतावादी अनुयायी, सुन्दर पत्नी या आलंकारिक भाषा में वर्णित सकाम कर्मों की कामना नहीं है। मैं तो इतना ही चाहता हूँ कि मैं जन्म-जन्मांतर आपकी अहैतुकी भक्ति करता रहूँ।'

''ধন, জন নাহি মাগোঁ, কবিতা সুন্দরী ।
'শুদ্ধ-ভক্তি' দেহ' মোরে, কৃষ্ণ কৃপা করি''' ॥৩০॥

"धन, जन नाहि मागों, कविता सुन्दरी ।
'शुद्ध-भक्ति' देह' मोरे, कृष्ण कृपा करि'" ॥ ३० ॥

धन—धन; **जन**—अनुयायीगण; **नाहि**—नहीं; **मागों**—मैं चाहता; **कविता सुन्दरी**—सुन्दर पत्नी या सकाम कर्म; **शुद्ध-भक्ति**—शुद्ध भक्ति; **देह'**—कृपया प्रदान करें; **मोरे**—मुझे; **कृष्ण**—हे भगवान् कृष्ण; **कृपा करि'**—कृपा करके।

अनुवाद

"हे कृष्ण, मैं आपसे न तो भौतिक सम्पत्ति चाहता हूँ, न अनुयायी, न सुन्दर स्त्री या सकाम कर्मों का फल चाहता हूँ। मेरी तो यही प्रार्थना है कि आप अपनी अहैतुकी कृपा से मुझे जन्म-जन्मांतर अपनी शुद्ध भक्ति प्रदान करें।

অতি-দৈন্যে পুনঃ মাগে দাস্য-ভক্তি-দান ।
আপনারে করে সংসারী জীব-অভিমান ॥৩১॥

अति-दैन्ये पुनः मागे दास्य-भक्ति-दान ।
आपनारे करे संसारी जीव-अभिमान ॥ ३१ ॥

अति-दैन्ये—अत्यन्त दीनतापूर्वक; **पुनः**—पुनः; **मागे**—याचना की; **दास्य-भक्ति-**

दान—सेवाभाव में भक्ति का दान; **आपनारे**—स्वयं को; **करे**—करके; **संसारी**—भौतिकतावादी; **जीव-अभिमान**—बद्धजीव समझते हुए।

अनुवाद

अपने आपको भौतिक जगत् का बद्धजीव समझते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु ने अत्यन्त दीनतापूर्वक पुनः भगवान् की सेवा प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की।

অয়ি নন্দ-তনুজ কিঙ্করং
পতিতং মাং বিষমে ভবাম্বুধৌ ।
কৃপয়া তব পাদ-পঙ্কজ-
স্থিত-ধূলী-সদৃশং বিচিন্তয় ॥৩২॥

अयि नन्द-तनुज किङ्करं
पतितं मां विषमे भवाम्बुधौ ।
कृपया तव पाद-पङ्कज-
स्थित-धूली-सदृशं विचिन्तय ॥ ३२॥

अयि—हे प्रभु; **नन्द-तनुज**—महाराज नन्द के पुत्र, कृष्ण; **किङ्करम्**—सेवक; **पतितम्**—पतित; **माम्**—मेरा; **विषमे**—विषम; **भव-अम्बुधौ**—भवसागर; **कृपया**—अहैतुकी कृपा से; **तव**—आपके; **पाद-पङ्कज**—चरणकमल; **स्थित**—में स्थित; **धूली-सदृशम्**—धूलि के समान; **विचिन्तय**—कृपया समझें।

अनुवाद

"'हे प्रभु, हे महाराज नन्द के पुत्र कृष्ण!' मैं आपका सनातन सेवक हूँ, किन्तु अपने ही सकाम कर्मों के कारण मैं अज्ञान के इस भयावह समुद्र में गिर गया हूँ। अब आप मुझ पर अहैतुकी कृपा करें। मुझे अपने चरणकमलों की धूलि का एक कण मानें।'

"তোমার নিত্য-দাস মুই, তোমা পাসরিয়া ।
পড়িয়াছোঁ ভবার্ণবে মায়া-বদ্ধ হঞা ॥৩৩॥

"तोमार नित्य-दास मुइ, तोमा पासरिया ।
पड़ियाछों भवार्णवे माया-बद्ध हञा ॥ ३३॥

तोमार—आपका; **नित्य-दास**—नित्य दास; **मुइ**—मैं; **तोमा पासरिया**—आपको भूलकर; **पड़ियाछों**—मैं पतित हो गया हूँ; **भव-अर्णवे**—भवसागर में; **माया-बद्ध हञा**—बहिरंगा शक्ति द्वारा बद्ध होकर।

अनुवाद

"मैं आपका नित्यदास हूँ, किन्तु मैंने आपको भुला दिया है। अब मैं अज्ञान के सागर में पतति हुआ हूँ और बहिरंगा शक्ति द्वारा बद्ध हुआ हूँ।

कृपा करि' कर मोरे पद-धूलि-सम ।
तोमार सेवक करौं तोमार सेवन'' ॥ ३४॥

कृपा करि' कर मोरे पद-धूलि-सम ।
तोमार सेवक करों तोमार सेवन" ॥ ३४॥

कृपा करि'—कृपालु होकर; **कर**—बनायें; **मोरे**—मुझे; **पद-धूलि-सम**—आपके चरणकमलों में धूल का एक कण; **तोमार सेवक**—चूँकि मैं आपका सनातन सेवक हूँ; **करों**—मुझे लगने दो; **तोमार सेवन**—आपकी सेवा में।

अनुवाद

"आप अपने चरणकमलों की धूल के कणों में मुझे स्थान देकर मुझ पर अहैतुकी कृपा करें, जिससे मैं आपके सनातन सेवक के रूप में आपकी सेवा में लग सकूँ।"

पुनः अति-उत्कण्ठा, दैन्य ह-इल उदगम ।
कृष्ण-ठाञि मागे प्रेम-नाम-सङ्कीर्तन ॥ ३५॥

पुनः अति-उत्कण्ठा, दैन्य ह-इल उद्गम ।
कृष्ण-ठाञि मागे प्रेम-नाम-सङ्कीर्तन ॥ ३५॥

पुनः—पुनः; **अति-उत्कण्ठा**—अत्यन्त उत्कण्ठा; **दैन्य**—दीनता; **ह-इल उद्गम**—का उदय हुआ; **कृष्ण-थाञि**—भगवान् कृष्ण से; **मागे**—प्रार्थना की; **प्रेम**—प्रेमावेश में; **नाम-सङ्कीर्तन**—महामन्त्र का कीर्तन।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु में सहज दीनता तथा उत्कण्ठा का उदय हुआ।

उन्होंने कृष्ण से प्रार्थना की कि प्रेमावेश में महामन्त्र का कीर्तन करने के लिए वे उन्हें सामर्थ्य दें।

नयनं गलदश्रु-धारया
वदनं गदगद-रुद्धया गिरा ।
पुलकैर्निचितं वपुः कदा
तव नाम-ग्रहणे भविष्यति ॥३६॥

नयनं गलदश्रु-धारया
वदनं गद्गद-रुद्धया गिरा ।
पुलकैर्निचितं वपुः कदा
तव नाम-ग्रहणे भविष्यति ॥ ३६ ॥

नयनम्—नेत्र; **गलत्-अश्रु-धारया**—बहते हुए अश्रुओं की धारा; **वदनम्**—मुख; **गद्गद**—गद्गद; **रुद्धया**—अवरुद्ध; **गिरा**—वाणी से; **पुलकैः**—दिव्य सुख के कारण रोमांच; **निचितम्**—आच्छादित; **वपुः**—देह; **कदा**—कब; **तव**—आपके; **नाम-ग्रहणे**—नाम का उच्चारण करने में; **भविष्यति**—होगा।

अनुवाद

"'हे प्रभु, कब आपके पवित्र नाम का कीर्तन करते हुए मेरे नेत्र प्रवहमान अश्रुओं से पूरित होकर सुशोभित होंगे? कब आपके पवित्र नाम का कीर्तन करते हुए दिव्य आनन्द में मेरी वाणी अवरूद्ध होगी और मेरे शरीर में रोमांच उत्पन्न होगा?'

''प्रेम-धन विना व्यर्थ दरिद्र जीवन ।
'दास' करि' वेतन मोरे देह प्रेम-धन'' ॥३७॥

"प्रेम-धन विना व्यर्थ दरिद्र जीवन ।
'दास' करि' वेतन मोरे देह प्रेम-धन" ॥ ३७ ॥

प्रेम-धन—प्रेमावेश रूपी धन; **विना**—के बिना; **व्यर्थ**—व्यर्थ; **दरिद्र जीवन**—दरिद्र जीवन; **दास करि'**—आपके सनातन सेवक के रूप में स्वीकार करके; **वेतन**—वेतन; **मोरे**—मुझे; **देह**—दीजिये; **प्रेम-धन**—भगवत्प्रेम रूपी धन।

अनुवाद

"भगवत्प्रेम के बिना मेरा जीवन व्यर्थ है। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि आप मुझे अपने सनातन सेवक के रूप में स्वीकार करें और वेतन के रूप में मुझे भगवत्प्रेम प्रदान करें।"

रसान्तरावेशे ह-इल वियोग-स्फूरण ।
उद्वेग, विषाद, दैन्ये करे प्रलपन ॥३८॥

रसान्तरावेशे ह-इल वियोग-स्फुरण ।
उद्वेग, विषाद, दैन्ये करे प्रलपन ॥ ३८ ॥

रस-अन्तर-आवेशे—विभिन्न रसों के लक्षणों वाला प्रेमावेश; **ह-इल**—हुई; **वियोग-स्फुरण**—वियोग की स्फुरणा; **उद्वेग**—उद्वेग; **विषाद**—विषाद; **दैन्ये**—दीनता; **करे प्रलपन**—उन्मत्त व्यक्ति की तरह बोलने लगे।

अनुवाद

कृष्ण के वियोग के कारण महाप्रभु में उद्वेग, विषाद तथा दैन्य नामक विविध रसों का उदय हो आया। इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु उन्मत्त की तरह बोलने लगे।

युगायितं निमेषेण चक्षुषा प्रावृषायितम् ।
शून्यायितं जगत्सर्वं गोविन्द-विरहेण मे ॥३९॥

युगायितं निमेषेण चक्षुषा प्रावृषायितम् ।
शून्यायितं जगत्सर्वं गोविन्द-विरहेण मे ॥ ३९ ॥

युगायितम्—बड़े युग के समान; **निमेषेण**—क्षणभर में; **चक्षुषा**—आँखों से; **प्रावृषायितम्**—अश्रुओं की धारा बहती है; **शून्यायितम्**—शून्य लगता है; **जगत्**—जगत्; **सर्वम्**—सारा; **गोविन्द**—भगवान् गोविन्द, कृष्ण से; **विरहेण मे**—मेरे विरह के कारण।

अनुवाद

"'हे गोविन्द, आपके वियोग में एक क्षण मुझे एक युग सा प्रतीत हो रहा है। मेरे नेत्रों से वर्षाधारा के समान अश्रु की धाराएँ प्रवाहित हो रही हैं और मैं सारे जगत् को शून्य सा देखता हूँ।'

উদ্বেগে দিবস না যায়, 'ক্ষণ' হৈল 'যুগ'-সম ।
বর্ষার মেঘ-প্রায় অশ্রু বরিষে নয়ন ॥ ৪০ ॥

উদ্বেগে দিবস না য়ায়, 'ক্ষণ' হৈল 'য়ুগ'-সম ।
বর্ষার মেঘ-প্রায় অশ্রু বরিষে নয়ন ॥ ৪০ ॥

উদ্বেগে—অत्यन्त उद्वेग के कारण; **दिवस**—दिन; **ना**—नहीं; **य़ाय**—कटता; **क्षण**—क्षण; **हैल**—हो गया है; **य़ुग-सम**—युग के समान; **वर्षार**—वर्षा ऋतु के; **मेघ-प्राय**—बादलों के समान; **अश्रु**—अश्रु; **वरिषे**—बरस रहे हैं; **नयन**—आँखों से।

अनुवाद

"उद्वेग के कारण मेरा दिन नहीं कटता, क्योंकि हर क्षण मुझे एक युग जैसा प्रतीत होता है। निरन्तर अश्रुपात करने से मेरी आँखें वर्षा ऋतु के बादलों जैसी बनी हुई हैं।

গোবিন্দ-বিরহে শূন্য হ-ইল ত্রিভুবন ।
তুষানলে পোড়ে,—যেন না যায় জীবন ॥ ৪১ ॥

गोविन्द-विरहे शून्य ह-इल त्रिभुवन ।
तुषानले पोड़े,—य़ेन ना य़ाय जीवन ॥ ४१ ॥

गोविन्द-विरहे—गोविन्द के विरह के कारण; **शून्य**—शून्य; **ह-इल**—हो गये हैं; **त्रि-भुवन**—तीनों भुवन; **तुष-अनले**—मन्द अग्नि में; **पोड़े**—जलता है; **य़ेन**—जैसे; **ना य़ाय**—नहीं जाता; **जीवन**—जीवन।

अनुवाद

"गोविन्द के विरह के कारण तीनों जगत् शून्य बन चुके हैं। मुझे ऐसा लगता है कि मैं जीवित ही मन्द अग्नि में जला जा रहा हूँ।

কৃষ্ণ উদাসীন হ-ইলা করিতে পরীক্ষণ ।
সখী সব কহে,—'কৃষ্ণে কর উপেক্ষণ' ॥ ৪২ ॥

कृष्ण उदासीन ह-इला करिते परीक्षण ।
सखी सब कहे,—'कृष्णे कर उपेक्षण' ॥ ४२ ॥

कृष्ण—भगवान् कृष्ण; **उदासीन**—उदासीन; **ह-इला**—हो गये हैं; **करिते**—करने के

लिए; **परीक्षण**—परीक्षा; **सखी सब कहे**—सारी सखियाँ कहती हैं; **कृष्णे**—कृष्ण की; **कर**—करो; **उपेक्षण**—उपेक्षा।

अनुवाद

"भगवान् कृष्ण मेरे प्रेम की परीक्षा लेने के लिए मुझसे उदासीन हो गये हैं और मेरी सखियाँ कहती हैं, 'अच्छा हो कि तुम कृष्ण की उपेक्षा करो।'"

এতেক চিন্তিতে রাধার নির্মল হৃদয় ।
স্বাভাবিক প্রেমার স্বভাব করিল উদয় ॥৪৩॥

एतेक चिन्तिते राधार निर्मल हृदय ।
स्वाभाविक प्रेमार स्वभाव करिल उदय ॥४३॥

एतेक—इस प्रकार; **चिन्तिते**—सोचते हुए; **राधार**—श्रीमती राधारानी का; **निर्मल हृदय**—शुद्ध हृदय होने से; **स्वाभाविक**—स्वाभाविक; **प्रेमार**—कृष्ण-प्रेम; **स्वभाव**—स्वभाव; **करिल उदय**—उदय हुआ।

अनुवाद

जब श्रीमती राधारानी इस प्रकार सोच रही थीं, तब उनमें स्वाभाविक प्रेम के गुण प्रकट हो गये, क्योंकि उनका हृदय शुद्ध था।

ঈর্ষ্যা, উৎকণ্ঠা, দৈন্য, প্রৌঢ়ি, বিনয় ।
এত ভাব এক-ঠাঞি করিল উদয় ॥৪৪॥

ईर्ष्या, उत्कण्ठा, दैन्य, प्रौढ़ि, विनय ।
एत भाव एक-ठाञि करिल उदय ॥४४॥

ईर्ष्या—ईर्ष्या; **उत्कण्ठा**—उत्कण्ठा; **दैन्य**—दीनता; **प्रौढ़ि**—उत्साह; **विनय**—विनय; **एत भाव**—ये सब दिव्य भाव; **एक-ठाञि**—एक स्थान पर; **करिल उदय**—उदित हुए।

अनुवाद

फिर तुरन्त ही ईर्ष्या, अत्यन्त उत्कण्ठा, दैन्य, उत्साह तथा विनय के भाव-लक्षण एक साथ प्रकट हो उठे।

এত ভাবে রাধার মন অস্থির হ-ইলা ।
সখী-গণ-আগে প্রৌঢ়ি-শ্লোক যে পড়িলা ॥ ৪৫ ॥

এত ভাবে রাধার মন অস্থির হ-ইলা ।
সখী-গণ-আগে প্রৌঢ়ি-শ্লোক যে পড়িলা ॥ ४५ ॥

एत भावे—उस भाव में; **राधार**—श्रीमती राधारानी का; **मन**—मन; **अस्थिर ह-इला**—उत्तेजित हो गया; **सखी-गण-आगे**—सखियों के आगे; **प्रौढ़ि-श्लोक**—उन्नत भक्ति का श्लोक; **ये**—जो; **पड़िला**—उन्होंने पढ़ा।

अनुवाद

उस भाव में श्रीमती राधारानी का मन क्षुब्ध था, अतएव उन्होंने अपनी गोपी-सखियों से उत्तम भक्ति का एक श्लोक कहा।

সেই ভাবে প্রভু সেই শ্লোক উচ্চারিলা ।
শ্লোক উচ্চারিতে তদ্রূপ আপনে হ-ইলা ॥ ৪৬ ॥

সেই ভাবে প্রভু সেই শ্লোক উচ্চারিলা ।
শ্লোক উচ্চারিতে তদ্রূপ আপনে হ-ইলা ॥ ४६ ॥

सेइ भावे—उस भावावेश में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **सेइ**—वह; **श्लोक**—श्लोक; **उच्चारिला**—सुनाया; **श्लोक**—श्लोक; **उच्चारिते**—सुनाने द्वारा; **तत्-रूप**—श्रीमती राधारानी के समान; **आपने**—स्वयं; **ह-इला**—हो गये।

अनुवाद

भाव के उस उन्माद में श्री चैतन्य महाप्रभु ने वह श्लोक सुनाया और ज्योंही उन्होंने श्लोक पढ़ा, उन्हें लगा कि वे श्रीमती राधारानी हैं।

আশ্লিষ্য বা পাদ-রতাং পিনষ্টু মাম্
অদর্শনান্মর্ম-হতাং করোতু বা ।
যথা তথা বা বিদধাতু লম্পটো
মত্প্রাণ-নাথস্তু স এব নাপরঃ ॥ ৪৭ ॥

আশ্লিষ্য বা পাদ-রতাং পিনষ্টু মাম্
অদর্শনান্মর্ম-হতাং করোতু বা ।
যথা তথা বা বিদধাতু লম্পটো
মত্প্রাণ-নাথস্তু স এব নাপরঃ ॥ ४७ ॥

आश्लिष्य—बड़े हर्ष से आलिंगन करके; **वा**—अथवा; **पाद-रताम्**—जो चरणकमलों में गिरा है; **पिनष्टु**—भले ही वे रौंद दें; **माम्**—मुझे; **अदर्शनात्**—दर्शन न देकर; **मर्म-हताम्**—हृदय तोड़ दें; **करोतु**—उन्हें करने दो; **वा**—अथवा; **यथा**—जैसे (वे चाहें); **तथा**—वैसा; **वा**—अथवा; **विदधातु**—वे करें; **लम्पटः**—लम्पट, अन्य स्त्रियों के साथ सम्बन्ध रखनेवाले; **मत्-प्राण-नाथः**—मेरे प्राणनाथ; **तु**—किन्तु; **सः**—वे; **एव**—केवल; **न अपरः**—अन्य कोई नहीं।

अनुवाद

"'अपने चरणकमलों पर पड़ी हुई इस दासी का कृष्ण गाढ़ आलिंगन करें या अपने पाँवों तले कुचल डालें अथवा कभी अपना दर्शन न देकर मेरा हृदय तोड़ दें। आखिर वे लम्पट हैं और जो चाहें सो कर सकते हैं, तो भी वे मेरे हृदय के परम आराध्य प्रभु हैं।'

''आमि—कृष्ण-पद-दासी, तेँहो—रस-सुख-राशि,
आलिङ्गिया करे आत्म-साथ ।
किवा ना देय दरशन, जारेन मोर तनु-मन,
तबु तेँहो—मोर प्राण-नाथ ॥४८॥

"आमि—कृष्ण-पद-दासी, तेंहो—रस-सुख-राशि,
आलिङ्गिया करे आत्म-साथ ।
किबा ना देय दरशन, जारेन मोर तनु-मन,
तबु तेंहो—मोर प्राण-नाथ ॥४८॥

आमि—मैं; **कृष्ण-पद-दासी**—कृष्ण के चरणकमलों की दासी; **तेंहो**—वे; **रस-सुख-राशि**—दिव्य रसों के आगर; **आलिङ्गिया**—आलिंगन करके; **करे**—करें; **आत्म-साथ**—विलीन; **किबा**—अथवा; **ना देय**—न दें; **दरशन**—दर्शन; **जारेन**—क्षार करें; **मोर**—मेरा; **तनु-मन**—देह तथा मन; **तबु**—फिर भी; **तेंहो**—वे; **मोर प्राण-नाथ**—मेरे प्राणनाथ।

अनुवाद

"मैं कृष्ण के चरणकमलों की दासी हूँ। वे दिव्य सुख तथा रस के मूर्तिमन्त स्वरूप हैं। यदि वे चाहें तो मेरा गाढ़ आलिंगन कर सकते हैं और मुझे अपने साथ एकात्मता का अनुभव करा सकते हैं। अथवा मुझे अपना दर्शन न देकर वे मेरे मन तथा शरीर को जलाकर क्षार कर करते हैं। फिर भी वे ही मेरे प्राणनाथ हैं।

सखि हे, शुन मोर मनेर निश्चय
किबा अनुराग करे, किबा दुःख दिया मारे, ।
मोर प्राणेश्वर कृष्ण——अन्य नय ॥४९॥

सखि हे, शुन मोर मनेर निश्चय
किबा अनुराग करे, किबा दुःख दिया मारे, ।
मोर प्राणेश्वर कृष्ण——अन्य नय ॥४९॥

सखि हे—हे प्रिय सखी; **शुन**—जरा सुनो; **मोर**—मेरे; **मनेर**—मन का; **निश्चय**—निश्चय; **किंबा**—यदि; **अनुराग**—अनुराग; **करे**—दिखाते हैं; **किबा**—या; **दुःख**—दुःख; **दिया**—देकर; **मारे**—मारते हैं; **मोर**—मेरे; **प्राण-ईश्वर**—प्राणेश्वर; **कृष्ण**—कृष्ण; **अन्य नय**—अन्य कोई नहीं।

अनुवाद

"हे सखी, तुम मेरे मन का निर्णय सुन लो। समस्त परिस्थितियों में कृष्ण ही मेरे जीवन के स्वामी हैं, चाहे वे मुझसे प्रेम करें या दुःख दे देकर मुझे मार डालें।

छाड़ि' अन्य नारी-गण, मोर वश तनु-मन,
मोर सौभाग्य प्रकट करिया ।
ता-सबारे देय पीड़ा, आमा-सने करे क्रीड़ा,
सेइ नारी-गणे देखाञा ॥५०॥

छाड़ि' अन्य नारी-गण, मोर वश तनु-मन,
मोर सौभाग्य प्रकट करिया ।
ता-सबारे देय पीड़ा, आमा-सने करे क्रीड़ा,
सेइ नारी-गणे देखाञा ॥५०॥

छाड़ि'—छोड़कर; **अन्य**—अन्य; **नारी-गण**—स्त्रियों का; **मोर**—मेरे; **वश**—वश में; **तनु-मन**—मन तथा देह; **मोर**—मेरा; **सौभाग्य**—सौभाग्य; **प्रकट करिया**—प्रकट करके; **ता-सबारे**—उन सब को; **देय पीड़ा**—पीड़ा पहुँचाते हैं; **आमा-सने**—मेरे साथ; **करे क्रीड़ा**—प्रेम व्यवहार करते हैं; **सेइ नारी-गणे**—इन स्त्रियों को; **देखाञा**—दिखाकर।

अनुवाद

"कभी-कभी कृष्ण अन्य गोपियों का साथ छोड़ देते हैं और उनका

तन तथा मन मेरे द्वारा नियन्त्रित होता है। इस तरह वे मेरे सौभाग्य को प्रकट करते हैं और मेरे साथ प्रेमालाप करके अन्यों को पीड़ा पहुँचाते हैं।

किवा तेँहो लम्पट, शठ, धृष्ट, सकपट,
अन्य नारी-गण करि' साथ ।
मोरे दिते मनः-पीड़ा, मोर आगे करे क्रीड़ा,
तबु तेँहो—मोर प्राण-नाथ ॥ ५१ ॥

किबा तेंहो लम्पट, शठ, धृष्ट, सकपट,
अन्य नारी-गण करि' साथ ।
मोरे दिते मनः-पीड़ा, मोर आगे करे क्रीड़ा,
तबु तेंहो—मोर प्राण-नाथ ॥ ५१ ॥

किबा—अथवा; **तेंहो**—वे; **लम्पट**—लम्पट; **शठ**—शठ; **धृष्ट**—धृष्ट; **सकपट**—धोखा देने की प्रवृत्ति; **अन्य**—अन्य; **नारी-गण**—स्त्रियाँ; **करि'**—स्वीकार करके; **साथ**—साथी के रूप में; **मोरे**—मुझे; **दिते**—देने के लिए; **मनः-पीड़ा**—मन में पीड़ा; **मोर आगे**—मेरे ही सामने; **करे क्रीड़ा**—प्रेम-क्रीड़ा करते हैं; **तबु**—फिर भी; **तेंहो**—वे; **मोर प्राण-नाथ**—मेरे प्राणनाथ।

अनुवाद

"अथवा, चूँकि वे ठहरे अत्यन्त चतुर धृष्ट लम्पट जिसमें धोखा देने की प्रवृत्ति है, इसीलिए वे अन्य स्त्रियों का साथ करते हैं। तब वे उनके साथ, मेरे ही सामने मेरे मन को पीड़ा पहुँचाने के लिए प्रेमक्रीड़ा करने लगते हैं। इतने पर भी वे मेरे प्राणनाथ हैं।

ना गणि आपन-दुःख, सबे वाञ्छि ताँर सुख,
ताँर सुख—आमार ताल्पर्य ।
मोरे यदि दिया दुःख, ताँर हैल महा-सुख,
सेइ दुःख—मोर सुख-वर्य ॥ ५२ ॥

ना गणि आपन-दुःख, सबे वाञ्छि ताँर सुख,
ताँर सुख—आमार तात्पर्य्य ।
मोरे यदि दिया दुःख, ताँर हैल महा-सुख,
सेइ दुःख—मोर सुख-वर्य्य ॥ ५२ ॥

ना—नहीं; **गणि**—मैं गिनती हूँ; **आपन-दुःख**—मेरा खुद का दुःख; **सबे**—केवल; **वाञ्छि**—मैं चाहती हूँ; **ताँर सुख**—उनका सुख; **ताँर सुख**—उनका सुख; **आमार तात्पर्य्य**—मेरे जीवन का लक्ष्य; **मोरे**—मुझे; **य्यदि**—यदि; **दिया दुःख**—दुःख देने में; **ताँर**—उनका; **हैल**—होता है; **महा-सुख**—बड़ा सुख; **सेइ दुःख**—वह दुःख; **मोर सुख-वर्य्य**—मेरा सब से बड़ा सुख।

अनुवाद

"मुझे अपनी खुद की पीड़ा की चिन्ता नहीं है। मैं तो कृष्ण के सुख की ही कामना करती हूँ, क्योंकि उनका सुख ही मेरे जीवन का लक्ष्य है। किन्तु यदि वे मुझे पीड़ा देने में ही महान् सुख का अनुभव करते हैं, तो वह पीड़ा मेरा सबसे श्रेष्ठ सुख है।

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर कहते हैं कि भक्त अपने खुद के सुख तथा दुःख की चिन्ता नहीं करता। वह तो केवल कृष्ण को सुखी देखना चाहता है और इसी उद्देश्य से वह विविध कार्यों में लगा रहता है। शुद्ध भक्त को सुख की अनुभूति करने का इसके अतिरिक्त अन्य कोई रास्ता नहीं होता कि वह यह देखे कि कृष्ण सभी प्रकार से सुखी हैं। यदि कृष्ण उसे पीड़ा पहुँचाकर सुखी बनते हैं, तो ऐसा भक्त उस दुःख को सबसे बड़े सुख के रूप में स्वीकार करता है। किन्तु जो भौतिकतावादी हैं, जो भौतिक सम्पत्ति पर बहुत गर्व करते हैं और जिन्हें कोई आध्यात्मिक ज्ञान नहीं होता यथा प्राकृत सहजिए, वे अपने ही सुख को जीवन का लक्ष्य मानते हैं। उनमें से कुछ कृष्ण के सुख में हिस्सा बँटाकर स्वयं भोग करने की महती आकांक्षा रखते हैं। यह उन सकाम कर्मियों की मनोवृत्ति है, जो कृष्ण की सेवा का प्रदर्शन करके इन्द्रियतृप्ति का आनन्द लेना चाहते हैं।

যে নারীরে বাঞ্ছে কৃষ্ণ, তার রূপে সতৃষ্ণ,
তারে না পাঞা হয় দুঃখী ।
মুই তার পায় পড়ি', লঞা যাঙ হাতে ধরি',
ক্রীড়া করাঞা তাঁরে করোঁ সুখী ॥৫৩॥

য়े नारीरे वाञ्छे कृष्ण, तार रूपे सतृष्ण,
तारे ना पाञा हय दुःखी ।
मुइ तार पाय पड़ि', लञा য়াঙ हाते धरि',
क्रीड़ा कराञा ताँरे करों सुखी ॥५३॥

য়े नारीरे—जिस स्त्री के; **वाञ्छे कृष्ण**—साथ की कृष्ण इच्छा करते हैं; **तार रूपे सतृष्ण**—उसके सौन्दर्य से आकृष्ट होकर; **तारे**—उसे; **ना पाञा**—न पाकर; **हय दुःखी**—दुःखी होते हैं; **मुइ**—मैं; **तार पाय पड़ि'**—उसके पैरों में गिरकर; **लञा য়াঙ**—लेकर; **हाते धरि'**—हाथ पकड़कर; **क्रीड़ा**—क्रीड़ा; **कराञा**—करने के लिए; **ताँरे**—भगवान् कृष्ण; **करों सुखी**—मैं सुखी करती हूँ।

अनुवाद

"यदि कृष्ण किसी अन्य स्त्री के सौन्दर्य से आकृष्ट होकर उसके साथ रमण करना चाहते हैं, किन्तु दुःखी रहते हैं कि वे उसे नहीं पा सकते, तो मैं उसके पाँवों पर गिरकर उसका हाथ पकड़कर कृष्ण के पास लाती हूँ और उनकी प्रसन्नता के लिए उसे कृष्ण के साथ क्रीड़ा करने के लिए छोड़ देती हूँ।

কান্তা কৃষ্ণে করে রোষ, কৃষ্ণ পায় সন্তোষ,
সুখ পায় তাড়ন-ভর্ৎসনে ।
যথা-যোগ্য করে মান, কৃষ্ণ তাতে সুখ পান,
ছাড়ে মান অল্প-সাধনে ॥৫৪॥

कान्ता कृष्णे करे रोष, कृष्ण पाय सन्तोष,
सुख पाय ताड़न-भर्त्सने ।
য়था-য়োग्य करे मान, कृष्ण ताते सुख पान,
छाड़े मान अल्प-साधने ॥५४॥

कान्ता—प्रिया; **कृष्णे**—भगवान् कृष्ण के प्रति; **करे रोष**—क्रोध प्रकट करती है; **कृष्ण पाय सन्तोष**—कृष्ण अत्यन्त तुष्ट होते हैं; **सुख पाय**—सुख पाते हैं; **ताड़न-भर्त्सने**—मर्त्सना के द्वारा; **য়था-য়োग्य**—यथा योग्य; **करे मान**—गर्व दिखाती है; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **ताते**—ऐसे कार्यकलाप में; **सुख पान**—सुख पाते हैं; **छाड़े मान**—गर्व छोड़ देती है; **अल्प-साधने**—थोड़े प्रयत्न के बाद।

अनुवाद

"जब कोई प्रिया गोपी कृष्ण से क्रोध प्रकट करती है, तो कृष्ण अत्यन्त तुष्ट होते हैं। निस्सन्देह, जब उनकी ऐसी गोपी द्वारा भर्त्सना की जाती है, तब वे अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। वह उपयुक्त ढंग से अपना गर्व प्रदर्शित करती है और कृष्ण उस मुद्रा का आनन्द लूटते हैं। तब वह कुछ प्रयत्न के बाद अपना गर्व छोड़ देती है।

সেই নারী জীয়ে কেনে, কৃষ্ণ-মর্ম ব্যথা জানে,
তবু কৃষ্ণে করে গাঢ় রোষ ।
নিজ-সুখে মানে কাজ, পড়ুক তার শিরে বাজ,
কৃষ্ণের মাত্র চাহিয়ে সন্তোষ ॥৫৫॥

সেই নারী জীয়ে কেনে, কৃষ্ণ-মর্ম ব্যথা জানে,
তবু কৃষ্ণে করে গাঢ় রোষ ।
নিজ-সুখে মানে কাজ, পড়ুক তার শিরে বাজ,
কৃষ্ণের মাত্র চাহিয়ে সন্তোষ ॥৫৫॥

सेइ नारी—वह स्त्री; **जीये**—जीवित रहती है; **केने**—क्यों; **कृष्ण-मर्म**—कृष्ण का हृदय; **व्यथा**—दुःखी; **जाने**—जानते हुए; **तबु**—फिर भी; **कृष्णे**—कृष्ण को; **करे**—करती है; **गाढ़ रोष**—गहरा रोष; **निज-सुखे**—अपने सुख में; **माने**—मानती है; **काज**—एक मात्र कार्य; **पड़ुक**—गिरने दो; **तारे**—उसके; **शिरे**—सिर पर; **वाज**—वज्र; **कृष्णेर**—कृष्ण का; **मात्र**—केवल; **चाहिये**—हम चाहती हैं; **सन्तोष**—सुख।

अनुवाद

"जो स्त्री जानती है कि कृष्ण का हृदय दुःखी है और फिर भी वह उनके प्रति अपना गहरा रोष प्रकट करती है, ऐसी स्त्री क्यों जीवित रहती है? वह अपने ही सुख में रुचि लेती है। मैं ऐसी स्त्री को धिक्कारती हूँ। उसके सिर पर वज्र गिरे, क्योंकि हम तो केवल कृष्ण का सुख चाहती हैं।

तात्पर्य

जो भक्त केवल अपनी ही इन्द्रियतृप्ति से तुष्ट होता है, वह निश्चय ही

कृष्ण सेवा से पतित हो जाता है। भौतिक सुख से आकृष्ट होने के बाद वह प्राकृत सहजियों का साथ कर लेता है, जो अभक्त माने जाते हैं।

যে গোপী মোর করে দ্বেষে, কৃষ্ণের করে সন্তোষে,
কৃষ্ণ যারে করে অভিলাষ ।
মুই তার ঘরে যাঞা, তারে সেবোঁ দাসী হঞা,
তবে মোর সুখের উল্লাস ॥৫৬॥

য়ে গোপী মোর করে দ্বেষে, কৃষ্ণোর করে সন্তোষে,
কৃষ্ণ য়ারে করে অভিলাষ ।
মুই তার ঘরে য়াঞা, তারে সেবোঁ দাসী হঞা,
তবে মোর সুখের উল্লাস ॥৫৬॥

য়ে গোপী—कोई गोपी जो; **मोर**—मुझे; **करे द्वेषे**—ईर्ष्या दिखाती है; **कृष्णोर करे सन्तोषे**—किन्तु कृष्ण को तुष्ट करती है; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण को; **य़ारे**—जिसको; **करे**—करते हैं; **अभिलाष**—इच्छा; **मुइ**—मैं; **तार**—उसके; **घरे य़ाञा**—घर जाकर; **तारे सेवों**—उसकी सेवा करूँगी; **दासी हञा**—दासी बनकर; **तबे**—तब; **मोर**—मेरा; **सुखेर उल्लास**—सुख का उदय।

अनुवाद

"यदि मुझसे ईर्ष्या करने वाली कोई गोपी कृष्ण को तुष्ट करती है और कृष्ण उसे चाहने लगते हैं, तो मैं उसके घर जाने में नहीं हिचकूँगी और उसकी दासी बन जाऊँगी, क्योंकि तब मेरा सुख जाग्रत हो उठेगा।

কুষ্ঠী-বিপ্রের রমণী, পতিব্রতা-শিরোমণি,
পতি লাগি' কৈলা বেশ্যার সেবা ।
স্তম্ভিল সূর্যের গতি, জীয়াইল মৃত পতি,
তুষ্ট কৈল মুখ্য তিন-দেবা ॥৫৭॥

কুষ্ঠী-বিপ্রের রমণী, পতিব্রতা-শিরোমণি,
পতি লাগি' কৈলা বেশ্যার সেবা ।
স্তম্ভিল সূর্য্যের গতি, জীয়াইল মৃত পতি,
তুষ্ট কৈল মুখ্য তিন-দেবা ॥৫৭॥

कुष्ठी-विप्रेर—कुष्ठ रोग से पीड़ित ब्राह्मण की; **रमणी**—पत्नी; **पति-व्रता-शिरोमणि**—सती स्त्रियों में श्रेष्ठ; **पति लागि'**—अपने पति के सन्तोष के लिए; **कैला**—की; **वेश्यार सेवा**—वेश्या की सेवा; **स्तम्भिल**—रोक दी; **सूर्येर गति**—सूर्य की गति; **जीयाइल**—जीवित किया; **मृत पति**—मृत पति को; **तुष्ट कैल**—तुष्ट किया; **मुख्य**—मुख्य; **तिन-देवा**—तीन देवताओं को।

अनुवाद

"कुष्ठरोग से पीड़ित ब्राह्मण की पत्नी ने अपने पति को तुष्ट करने के लिए एक वेश्या की सेवा करके अपने आपको सर्वश्रेष्ठ सती के रूप में प्रकट किया। इस तरह उसने सूर्य की गति रोक दी, अपने मृत पति को जीवित किया और तीन प्रमुख देवताओं (ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश्वर) को तुष्ट किया।

तात्पर्य

आदित्य पुराण, मार्कण्डेय पुराण तथा *पद्म पुराण* में एक ब्राह्मण की कथा आती है, जो कुष्ठ रोग से पीड़ित था, किन्तु जिसकी पत्नी अत्यन्त आज्ञाकारिणी तथा सती थी। वह ब्राह्मण एक वेश्या के साथ सम्भोग करना चाहता था, अतएव उसकी पत्नी उस वेश्या के पास गई और उसकी दासी बन गई, जिससे उसके पति की सेवा के प्रति उसका ध्यान आकृष्ट हो। जब वह वेश्या उसके पति के साथ संभोग के लिए तैयार हो गई, तो वह सती अपने कोढ़ी पति को उसके पास ले आई। जब उस कोढ़ी पापी ब्राह्मण-पुत्र ने अपनी पत्नी के सतीत्व को देखा, तो उसके पापमय मनोभाव बदल गये। किन्तु घर आते समय उसका शरीर मार्कण्डेय ऋषि के शरीर से स्पर्श कर गया, जिन्होंने उसे सूर्योदय के साथ मर जाने का शाप दे दिया। वह स्त्री अपने सतीत्व के कारण अत्यन्त बलशाली थी। अतएव जब उसने शाप के विषय में सुना, तो उसने सूर्योदय को रोकने का व्रत लिया। अपने पति की सेवा करने के प्रबल निश्चय के कारण तीनों देवता—ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश्वर—अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे यह वर दिया कि उसका पति स्वस्थ हो जाय और जीवित हो उठे। यह दृष्टान्त यहाँ पर इस बात पर बल देने के लिए दिया गया है कि भक्त को केवल कृष्ण की तुष्टि हेतु निजी स्वार्थ के बिना अपने आपको उनकी सेवा में लगाना चाहिए। इससे उसका जीवन सफल हो जायेगा।

"कृष्ण——मोर जीवन, कृष्ण——मोर प्राण-धन,
कृष्ण——मोर प्राणेर पराण ।
हृदय-उपरे धरों, सेवा करि' सुखी करों,
एइ मोर सदा रहे ध्यान ॥५८॥

"कृष्ण——मोर जीवन, कृष्ण——मोर प्राण-धन,
कृष्ण——मोर प्राणेर पराण ।
हृदय-उपरे धरों, सेवा करि' सुखी करों,
एइ मोर सदा रहे ध्यान ॥५८॥

कृष्ण—भगवान् कृष्ण; **मोर जीवन**—मेरे जीवन और प्राण; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **मोर प्राण-धन**—मेरे जीवन के धन; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **मोर प्राणेर पराण**—मेरे प्राण के भी प्राण; **हृदय-उपरे**—मेरे हृदय में; **धरों**—मैं रखती हूँ; **सेवा करि'**—सेवा करके; **सुखी करों**—मैं सुखी करती हूँ; **एइ**—यह; **मोर**—मेरा; **सदा**—सदा; **रहे**—रहता है; **ध्यान**—ध्यान।

अनुवाद

"कृष्ण मेरे प्राण हैं। कृष्ण मेरे जीवन के धन हैं। निस्सन्देह, वे मेरे प्राण के भी प्राण हैं। इसलिए मैं उन्हें सदा अपने हृदय में रखती हूँ और सेवा करके उन्हें प्रसन्न करना चाहती हूँ। इसी पर मेरा निरन्तर ध्यान रहता है।

मोर सुख——सेवने, कृष्णेर सुख——सङ्गमे,
अतएव देह देङ दान ।
कृष्ण मोरे 'कान्ता' करि', कहे मोरे 'प्राणेश्वरि',
मोर हय 'दासी'-अभिमान ॥५९॥

मोर सुख——सेवने, कृष्णेर सुख——सङ्गमे,
अतएव देह देङ दान ।
कृष्ण मोरे 'कान्ता' करि', कहे मोरे 'प्राणेश्वरि',
मोर हय 'दासी'-अभिमान ॥५९॥

मोर सुख—मेरा सुख; **सेवने**—सेवा में; **कृष्णेर सुख**—कृष्ण का सुख; **सङ्गमे**—मेरे साथ संग में; **अतएव**—अतः; **देह**—मेरा शरीर; **देङ**—मैं अर्पण करती हूँ; **दान**—दान में; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **मोरे**—मुझे; **कान्ता करि'**—प्रिया के रूप में स्वीकार करके; **कहे**—

कहते हैं; **मोरे**—मुझे; **प्राण-ईश्वरि**—प्राणेश्वरी; **मोर**—मेरा; **हय**—है; **दासी-अभिमान**—उनकी दासी समझकर।

अनुवाद

"मेरा सुख तो कृष्ण की सेवा में है और कृष्ण का सुख मेरे साथ संयोग में है। इसीलिए मैं अपना शरीर कृष्ण के चरणकमलों पर दान देती हूँ। वे मुझे अपनी प्रिया के रूप में स्वीकार करके मुझे सर्वाधिक प्रिय (प्रिया) कहकर पुकारते हैं। तभी मैं अपने आपको उनकी दासी करके मानती हूँ।

কান্ত-সেবা-সুখ-পূর, সঙ্গম হৈতে সুমধুর,
তাতে সাক্ষী—লক্ষ্মী ঠাকুরাণী ।
নারায়ণ-হৃদি স্থিতি, তবু পাদ-সেবায় মতি,
সেবা করে 'দাসী'-অভিমানী ॥ ৬০॥

কান্ত-সেবা-সুখ-পূর, সঙ্গম হৈতে সুমধুর,
তাতে সাক্ষী—লক্ষ্মী ঠাকুরাণী ।
নারায়ণ-হৃদি স্থিতি, তবু পাদ-সেবায় মতি,
সেবা করে 'দাসী'-অভিমানী ॥ ৬০॥

কান্ত-সেবা-সুখ-পূর—भगवान् की सेवा सुख का घर है; **সঙ্গম হৈতে সু-মধুর**—प्रत्यक्ष संयोग से भी मधुर; **তাতে**—उसका; **সাক্ষী**—प्रमाण; **লক্ষ্মী ঠাকুরাণী**—लक्ष्मीजी; **নারায়ণ-হৃদি**—नारायण के हृदय पर; **স্থিতি**—स्थित; **তবু**—फिर भी; **পাদ-সেবায় মতি**—चरणकमलों की सेवा करने की उनकी इच्छा; **সেবা করে**—सेवा करती हैं; **দাসী-অভিমানী**—अपने आपको दासी समझकर।

अनुवाद

"मेरे प्रेमी की सेवा सुख का घर है और प्रेमी के प्रत्यक्ष संयोग की अपेक्षा अधिक मधुर है। इसका प्रमाण लक्ष्मीजी हैं, क्योंकि वे नारायण के हृदय पर निरन्तर रहते हुए भी उनके चरणकमलों की सेवा करना चाहती हैं। इसीलिए वे अपने आपको दासी मानती हैं और उनकी निरन्तर सेवा करती हैं।"

এই রাধার বচন, বিশুদ্ধ-প্রেম-লক্ষণ,
আস্বাদয়ে শ্রী-গৌর-রায় ।
ভাবে মন নহে স্থির, সাত্ত্বিকে ব্যাপে শরীর,
মন-দেহ ধরণ না যায় ॥৬১॥

এइ राधार वचन, विशुद्ध-प्रेम-लक्षण,
आस्वादये श्री-गौर-राय ।
भावे मन नहे स्थिर, सात्त्विके व्यापे शरीर,
मन-देह धरण ना य्राय ॥ ६१ ॥

एइ—ये; **राधार वचन**—श्रीमती राधारानी के कथन; **विशुद्ध-प्रेम-लक्षण**—कृष्ण के शुद्ध प्रेम के लक्षण; **आस्वादये**—आस्वादन करते हैं; **श्री-गौर-राय**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भावे**—इस भाव के कारण; **मन नहे स्थिर**—मन स्थिर नहीं रहता; **सात्त्विके**—दिव्य प्रेम के लक्षण; **व्यापे**—व्याप्त होते हैं; **शरीर**—शरीर; **मन-देह**—मन तथा शरीर; **धरण**—धारण करना; **ना य्राय**—सम्भव नहीं है।

अनुवाद

श्रीमती राधारानी के ये कथन श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा आस्वादन किये गये शुद्ध कृष्ण-प्रेम के लक्षणों को प्रदर्शित करते हैं। उस प्रेमावेश में उनका मन अस्थिर रहता था। उनके सारे शरीर में दिव्य प्रेम के विकार व्याप्त हो जाते और वे अपने शरीर तथा मन को धारण नहीं कर पाते थे।

ব্রজের বিশুদ্ধ-প্রেম,— যেন জাম্বূ-নদ হেম,
আত্ম-সুখের যাহাঁ নাহি গন্ধ ।
সে প্রেম জানা'তে লোকে, প্রভু কৈলা এই শ্লোকে,
পদে কৈলা অর্থের নির্বন্ধ ॥৬২॥

व्रजेर विशुद्ध-प्रेम,— य्रेन जाम्बू-नद हेम,
आत्म-सुखेर य्राहाँ नाहि गन्ध ।
से प्रेम जाना'ते लोके, प्रभु कैला एइ श्लोके,
पदे कैला अर्थेर निर्बन्ध ॥ ६२ ॥

व्रजेर—वृन्दावन का; **विशुद्ध-प्रेम**—कृष्ण का शुद्ध प्रेम; **य्रेन**—जैसे; **जाम्बू-नद हेम**—जाम्बू नदी में पाया जाने वाला सुनहरा कण; **आत्म-सुखेर**—निजी इन्द्रियतृप्ति का; **य्राहाँ**—कहाँ; **नाहि गन्ध**—गन्ध भी नहीं है; **से प्रेम**—उस भगवत्प्रेम की; **जाना'ते लोके**—लोगों में

विज्ञापन करने हेतु; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कैला**—लिखा है; **एइ श्लोके**—यह श्लोक; **पदे**—विभिन्न पदों में; **कैला अर्थेर निर्बन्ध**—वास्तविक अर्थ को स्पष्ट किया है।

अनुवाद

"वृन्दावन में शुद्ध भक्ति जाम्बू नदी में सुनहले कण के समान है। वृन्दावन में निजी इन्द्रियतृप्ति का रंच मात्र भी अस्तित्त्व नहीं है। ऐसे ही शुद्ध प्रेम को इस भौतिक जगत् में विज्ञापित करने हेतु श्री चैतन्य महाप्रभु ने पिछला श्लोक लिखा है और उसकी व्याख्या की है।

तात्पर्य

यहाँ जिस श्लोक का उल्लेख किया गया है, वह श्लोक ४७ है, जो कि शिक्षाष्टक का आठवाँ श्लोक है।

এই-মত মহাপ্রভু ভাবাবিষ্ট হঞা ।
প্রলাপ করিলা তত্তচ্ছ্লোক পড়িয়া ॥ ৬৩ ॥

एइ-मत महाप्रभु भावाविष्ट हञा ।
प्रलाप करिला तत् तत् श्लोक पड़िया ॥ ६३ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भाव-आविष्ट हञा**—प्रेमावेश से अभिभूत होकर; **प्रलाप करिला**—उन्मत्त शब्द कहे; **तत्-तत्**—उपयुक्त; **श्लोक पड़िया**—श्लोक सुनाकर।

अनुवाद

इस तरह प्रेमावेश से अभिभूत होकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन्मत्त की तरह बोलकर उपयुक्त श्लोक सुनाये।

পূর্বে অষ্ট-শ্লোক করি' লোকে শিক্ষা দিলা ।
সেই অষ্ট-শ্লোকের অর্থ আপনে আস্বাদিলা ॥ ৬৪ ॥

पूर्वे अष्ट-श्लोक करि' लोके शिक्षा दिला ।
सेइ अष्ट-श्लोकेर अर्थ आपने आस्वादिला ॥ ६४ ॥

पूर्वे—पहले; **अष्ट-श्लोक करि'**—आठ श्लोकों की रचना करके; **लोके शिक्षा दिला**—सामान्य लोगों के शिक्षा दी; **सेइ**—वे; **अष्ट-श्लोकेर**—आठ श्लोकों का; **अर्थ**—अर्थ; **आपने आस्वादिला**—स्वयं आस्वादन किया।

अनुवाद

महाप्रभु ने पहले इन आठ श्लोकों की रचना सामान्य जनों को शिक्षा देने के लिए की थी। अब उन्होंने स्वयं इन श्लोकों के अर्थ का आस्वादन किया, जिन्हें शिक्षाष्टक कहा जाता है।

प्रभुर 'शिक्षाष्टक'-श्लोक येई पड़े, शुने ।
कृष्णे प्रेम-भक्ति तार बाड़े दिने-दिने ॥ ६५ ॥

प्रभुर 'शिक्षाष्टक'-श्लोक येइ पड़े, शुने ।
कृष्णे प्रेम-भक्ति तार बाड़े दिने-दिने ॥ ६५ ॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **शिक्षा-अष्टक**—शिक्षाष्टक के; **श्लोक**—श्लोक; **येइ**—जो कोई भी; **पड़े**—पढ़ता है; **शुने**—या सुनता है; **कृष्णे**—भगवान् कृष्ण के प्रति; **प्रेम-भक्ति**—प्रेमावेश तथा भक्ति; **तार**—उसकी; **बाड़े**—बढ़ते हैं; **दिने-दिने**—दिन प्रतिदिन।

अनुवाद

"यदि कोई व्यक्ति श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा लिखित इन शिक्षाष्टक श्लोकों को सुनाता या सुनता है, तो कृष्ण के प्रति उसका प्रेमावेश तथा भक्ति दिन प्रतिदिन बढ़ते जाते हैं।

यद्यपिह प्रभु—कोटी-समुद्र-गम्भीर ।
नाना-भाव-चन्द्रोदये हयेन अस्थिर ॥ ६६ ॥

यद्यपिह प्रभु—कोटी-समुद्र-गम्भीर ।
नाना-भाव-चन्द्रोदये हयेन अस्थिर ॥ ६६ ॥

यद्यपिह—यद्यपि; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कोटी-समुद्र-गम्भीर**—करोड़ों समुद्रों के समान गहन; **नाना**—विविध; **भाव**—भावावेश; **चन्द्रोदये**—चन्द्रोदय के कारण; **हयेन**—कभी हो जाते हैं; **अस्थिर**—अस्थिर।

अनुवाद

यद्यपि श्री चैतन्य महाप्रभु करोड़ों समुद्रों के समान गहन तथा गम्भीर हैं, किन्तु जब उनके विविध भावों का चन्द्रमा उदय होता है, तब वे अस्थिर हो जाते हैं।

যেই যেই শ্লোক জয়দেব, ভাগবতে ।
রায়ের নাটকে, যেই আর কর্ণামৃতে ॥৬৭॥
সেই সেই ভাবে শ্লোক করিয়া পঠনে ।
সেই সেই ভাবাবেশে করেন আস্বাদনে ॥৬৮॥

যেই যেই শ্লোক জয়দেব, ভাগবতে ।
রায়ের নাটকে, যেই আর কর্ণামৃতে ॥৬৭॥
সেই সেই ভাবে শ্লোক করিয়া পঠনে ।
সেই সেই ভাবাবেশে করেন আস্বাদনে ॥৬৮॥

যেই যেই—जब जब; **শ্লোক**—श्लोक; **জয়দেব**—जयदेव गोस्वामी; **ভাগবতে**—श्रीमद्भागवत; **রায়ের নাটকে**—रामानन्द राय द्वारा रचित नाटक; **যেই**—जो भी; **আর**—एवं; **কর্ণামৃতে**—बिल्वमंगल ठाकुर कृत कृष्ण कर्णामृत ग्रन्थ में; **সেই সেই ভাবে**—उन भावों में; **শ্লোক**—श्लोक; **করিয়া পঠনে**—नियमित रूप से पढ़ते; **সেই সেই**—उसमें; **ভাব-আবেশে**—भावावेश; **করেন আস্বাদনে**—वे आस्वादन करते।

अनुवाद

जब जब श्री चैतन्य महाप्रभु जयदेव कृत 'गीत गोविन्द,' 'श्रीमद्भागवत,' रामानन्द राय कृत 'जगन्नाथ वल्लभ नाटक' तथा बिल्व मंगल ठाकुर कृत 'कृष्ण कर्णामृत' के श्लोक पढ़ते, तब तब वे उन श्लोकों के भावों से अभिभूत हो उठते। इस तरह वे उनके तात्पर्यों का आस्वादन करते।

দ্বাদশ বত্সর ঐছে দশা——রাত্রি-দিনে ।
কৃষ্ণ-রস আস্বাদয়ে দুই-বন্ধু-সনে ॥৬৯॥

দ্বাদশ বত্সর ঐছে দশা——রাত্রি-দিনে ।
কৃষ্ণ-রস আস্বাদয়ে দুই-বন্ধু-সনে ॥৬৯॥

দ্বাদশ বত্সর—बारह वर्षों तक; **ঐছে দশা**—ऐसी अवस्था में; **রাত্রি-দিনে**—दिन-रात; **কৃষ্ণ-রস**—कृष्ण के सम्बन्ध में दिव्य आनन्द तथा रस; **আস্বাদয়ে**—वे आस्वादन करते; **দুই-বন্ধু-সনে**—रामानन्द राय तथा स्वरूप दामोदर गोस्वामी दोनों मित्रों के साथ।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु बारह वर्षों तक रात-दिन ऐसी अवस्था में रहे। उन्होंने अपने दोनों मित्रों के साथ उन श्लोकों के अर्थ का आस्वादन

किया, जो कृष्णभावनामृत के दिव्य आनन्द तथा रस के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है।

सेइ सब लीला-रस आपने अनन्त ।
सहस्र-वदने वर्णि' नाहि पा'न अन्त ॥७०॥

सेइ सब लीला-रस आपने अनन्त ।
सहस्र-वदने वर्णि' नाहि पा'न अन्त ॥७०॥

सेइ सब—ये सब; **लीला-रस**—श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं के दिव्य रस; **आपने**—स्वयं; **अनन्त**—भगवान् अनन्त; **सहस्र-वदने**—अपने हजारों मुखों से; **वर्णि'**—वर्णन करते हुए; **नाहि**—नहीं; **पा'न**—पाते हैं; **अन्त**—अन्त।

अनुवाद

हजार मुखों वाले अनन्तदेव भी श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं के दिव्य आनन्द का वर्णन करते हुए अन्त नहीं पाते।

जीव क्षुद्र-बुद्धि कोन्ताहा पारे वर्णिते? ।
तार एक कणा स्पर्शि आपना शोधिते ॥७१॥

जीव क्षुद्र-बुद्धि कोन् ताहा पारे वर्णिते? ।
तार एक कणा स्पर्शि आपना शोधिते ॥७१॥

जीव—जीव; **क्षुद्र-बुद्धि**—क्षुद्र बुद्धि वाला; **कोन्**—जो; **ताहा**—वह; **पारे**—समर्थ है; **वर्णिते**—लिखने के लिए; **तार**—उसका; **एक कणा**—एक कण; **स्पर्शि**—में छूता हूँ; **आपना शोधिते**—मुझे शुद्ध करने के लिए।

अनुवाद

तो भला एक सामान्य जीव अपनी क्षुद्र बुद्धि द्वारा किस तरह ऐसी लीलाओं का वर्णन कर सकता है? फिर भी मैं अपने आपको शुद्ध करने के लिए उनके एक कण को छूने का प्रयास कर रहा हूँ।

यत चेष्टा, यत प्रलाप,—नाहि पारावार ।
सेइ सब वर्णिते ग्रन्थ हय सुविस्तार ॥७२॥

यत चेष्टा, यत प्रलाप,—नाहि पारावार ।
सेइ सब वर्णिते ग्रन्थ हय सुविस्तार ॥ ७२ ॥

यत चेष्टा—सारी चेष्टा; **यत प्रलाप**—सारा प्रलाप; **नाहि पारावार**—अन्त नहीं है; **सेइ सब**—उन सब का; **वर्णिते**—वर्णन करने में; **ग्रन्थ**—ग्रन्थ; **हय**—हो जायेगा; **सु-विस्तार**—बहुत विस्तृत।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के कार्यकलापों तथा उनके उन्माद के शब्दों की कोई सीमा नहीं है। इसलिए उन सबों का वर्णन करने से इस ग्रन्थ का कलेवर बहुत अधिक बढ़ जायेगा।

বৃন্দাবন-দাস প্রথম যে লীলা বর্ণিল ।
সেই-সব লীলার আমি সূত্র-মাত্র কৈল ॥ ৭৩ ॥

वृन्दावन-दास प्रथम ये लीला वर्णिल ।
सेइ-सब लीलार आमि सूत्र-मात्र कैल ॥ ७३ ॥

वृन्दावन-दास—वृन्दावन दास ठाकुर; **प्रथम**—प्रथम; **ये**—जो भी; **लीला**—लीलाएँ; **वर्णिल**—वर्णित की हैं; **सेइ-सब**—वे सब; **लीलार**—लीलाओं का; **आमि**—मैंने; **सूत्र-मात्र कैल**—संक्षिप्त में दिया है।

अनुवाद

श्रील वृन्दावन दास ठाकुर ने जिन लीलाओं का सर्वप्रथम वर्णन किया है, उनको मैंने केवल संक्षिप्त में दे दिया है।

তাঁর ত্যক্ত 'অবশেষ' সঙ্ক্ষেপে কহিল ।
লীলার বাহুল্যে গ্রন্থ তথাপি বাড়িল ॥ ৭৪ ॥

ताँर त्यक्त 'अवशेष' सङ्क्षेपे कहिल ।
लीलार बाहुल्ये ग्रन्थ तथापि बाड़िल ॥ ७४ ॥

ताँर—उनकी; **त्यक्त**—बाकी बची; **अवशेष**—शेष; **सङ्क्षेपे कहिल**—मैंने संक्षेप में वर्णन किया है; **लीलार बाहुल्ये**—लीलाएँ अनेक होने के कारण; **ग्रन्थ**—यह ग्रन्थ; **तथापि**—तथापि; **बाड़िल**—बढ़ गया है।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की जिन लीलाओं का वर्णन वृन्दावन दास ठाकुर ने नहीं किया है, केवल उनका वर्णन मैंने अति संक्षेप में किया है। तो भी, ये दिव्य लीलाएँ इतनी अधिक हैं कि इस ग्रन्थ का कलेवर बढ़ गया है।

অতএব সেই-সব লীলা না পারি বর্ণিবারে ।
সমাপ্তি করিলুঁ লীলাকে করি' নমস্কারে ॥৭৫॥

অতএব সেই-সব লীলা না পারি বর্ণিবারে ।
সমাপ্তি করিলুঁ লীলাকে করি' নমস্কারে ॥৭৫॥

অতএব—অतः; **সেই-সব**—ये सब; **লীলা**—लीलाएँ; **না পারি**—मैं समर्थ नहीं हूँ; **বর্ণিবারে**—वर्णन करने में; **সমাপ্তি করিলুঁ**—अब मैंने समाप्त की है; **লীলাকে**—लीलाएँ; **করি' নমস্কারে**—मैं सादर नमस्कार करता हूँ।

अनुवाद

चूँकि सारी लीलाओं का विस्तार से वर्णन कर पाना असम्भव है, इसलिए मैं यह वर्णन समाप्त करूँगा और उन्हें सादर नमस्कार करूँगा।

যে কিছু কহিলুঁ এই দিগ্‌দরশন ।
এই অনুসারে হবে তার আস্বাদন ॥৭৬॥

যে কিছু কহিলুঁ এই দিগ্‌দরশন ।
এই অনুসারে হবে তার আস্বাদন ॥৭৬॥

যে কিছু—जो भी; **কহিলুঁ**—मैंने कहा है; **এই**—यह; **দিক্-দরশন**—केवल संकेत करने के लिए; **এই অনুসারে**—इस प्रकार; **হবে**—होगा; **তার**—उसका; **আস্বাদন**—आस्वादन।

अनुवाद

मैंने जो कुछ कहा है, वह मात्र संकेत है, किन्तु इस संकेत का अनुसरण करने पर मनुष्य श्री चैतन्य महाप्रभु की सारी लीलाओं का आस्वादन कर सकता है।

প্রভুর গম্ভীর-লীলা না পারি বুঝিতে ।
বুদ্ধি-প্রবেশ নাহি তাতে, না পারি বর্ণিতে ॥৭৭॥

प्रभुर गम्भीर-लीला ना पारि बुझिते ।
बुद्धि-प्रवेश नाहि ताते, ना पारि वर्णिते ॥ ७७ ॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **गम्भीर**—गम्भीर; **लीला**—लीलाएँ; **ना पारि**—मैं समर्थ नहीं हूँ; **बुझिते**—समझने के लिए; **बुद्धि-प्रवेश नाहि**—मेरी बुद्धि प्रवेश नहीं कर सकती; **ताते**—इसके कारण; **ना पारि**—मैं समर्थ नहीं हूँ; **वर्णिते**—यथायोग्य वर्णन करने के लिए।

अनुवाद

मैं श्री चैतन्य महाप्रभु की अत्यन्त गम्भीर तथा अर्थपूर्ण लीलाओं को नहीं समझ सकता। मेरी बुद्धि उनमें प्रवेश नहीं कर सकती, इसलिए मैं उनका उचित रीति से वर्णन नहीं कर सका।

सब श्रोता वैष्णवेर वन्दिया चरण ।
चैतन्य-चरित्र-वर्णन कैलुँ समापन ॥ ७८ ॥
सब श्रोता वैष्णवेर वन्दिया चरण ।
चैतन्य-चरित्र-वर्णन कैलुँ समापन ॥ ७८ ॥

सब श्रोता—समस्त पाठक; **वैष्णवेर**—वैष्णवों के; **वन्दिया चरण**—चरणकमलों में सादर नमस्कार करते हुए; **चैतन्य-चरित्र**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरित्र का; **वर्णन**—वर्णन; **कैलुँ**—मैं कर रहा हूँ; **समापन**—समाप्त।

अनुवाद

अपने समस्त वैष्णव पाठकों के चरणकमलों में सादर नमस्कार करके मैं श्री चैतन्य महाप्रभु के चरित्र का यह वर्णन समाप्त करूँगा।

आकाश—अनन्त, ताते यैछे पक्षि-गण ।
यार यत शक्ति, तत करे आरोहण ॥ ७९ ॥
आकाश—अनन्त, ताते ग्रैछे पक्षि-गण ।
ग्रार ग्रत शक्ति, तत करे आरोहण ॥ ७९ ॥

आकाश—आकाश; **अनन्त**—अनन्त; **ताते**—उस आकाश में; **ग्रैछे**—जिस तरह; **पक्षि-गण**—सभी प्रकार के पक्षी; **ग्रार**—किसी की; **ग्रत शक्ति**—जो शक्ति; **तत**—उतना; **करे आरोहण**—ऊपर उठ सकता है।

अनुवाद

आकाश असीम है, किन्तु अनेक पक्षी अपनी अपनी क्षमता के अनुसार ऊँची से ऊँची उड़ान भरते हैं।

ঐছে মহাপ্রভুর লীলা—নাহি ওর-পার ।
'জীব' হঞা কেবা সম্যক্পারে বর্ণিবার? ॥৮০॥

ऐछे महाप्रभुर लीला—नाहि ओर-पार ।
'जीव' हञा केबा सम्यक् पारे वर्णिबार? ॥८०॥

ऐछे—इसी प्रकार; **महाप्रभुर लीला**—श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ; **नाहि ओर-पार**—ऊपर या नीचे अन्त नहीं है; **जीव हञा**—सामान्य जीव होने के कारण; **केबा**—कौन; **सम्यक्**—पूर्णतया; **पारे**—समर्थ है; **वर्णिबार**—वर्णन करने में।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ असीम आकाश के समान हैं। तब भला कोई सामान्य जीव उन सबका वर्णन कैसे कर सकता है?

যাবদ্বুদ্ধির গতি, ততেক বর্ণিলুঁ ।
সমুদ্রের মধ্যে যেন এক কণ ছুঁইলুঁ ॥৮১॥

यावद् बुद्धिर गति, ततेक वर्णिलुँ ।
समुद्रेर मध्ये येन एक कण छुइलुँ ॥८१॥

यावत्—जहाँ तक; **बुद्धिर गति**—मेरी बुद्धि की मर्यादा है; **ततेक**—वहाँ तक; **वर्णिलुँ**—मैंने वर्णन किया है; **समुद्रेर मध्ये**—महान् समुद्र के बीच में; **येन**—जिस तरह; **एक कण**—एक कण; **छुइलुँ**—मैंने स्पर्श किया है।

अनुवाद

मैंने अपनी बुद्धिभर उनका वर्णन करने का प्रयास किया है, मानो मैं महासागर के बीच में एक बूँद का स्पर्श करने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

নিত্যানন্দ-কৃপা-পাত্র—বৃন্দাবন-দাস ।
চৈতন্য-লীলায় তেঁহো হয়েন 'আদি-ব্যাস' ॥৮২॥

नित्यानन्द-कृपा-पात्र——वृन्दावन-दास ।
चैतन्य-लीलाय तेंहो हयेन 'आदि-व्यास' ॥ ८२ ॥

नित्यानन्द—श्री नित्यानन्द प्रभु के; **कृपा-पात्र**—प्रिय भक्त; **वृन्दावन-दास**—वृन्दावन दास ठाकुर; **चैतन्य-लीलाय**—श्री चैतन्य महाप्रभु की लीला में; **तेंहो**—वे; **हयेन**—हैं; **आदि-व्यास**—आदि व्यासदेव।

अनुवाद

वृन्दावन दास ठाकुर श्री नित्यानन्द प्रभु के प्रिय भक्त हैं, अतएव वे श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं का वर्णन करने में आदि व्यासदेव हैं।

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर कहते हैं कि वृन्दावन दास ठाकुर के बाद के सारे लेखक, जो कि श्री चैतन्य महाप्रभु के शुद्ध भक्त हैं तथा जिन्होंने महाप्रभु के कार्यकलापों का वर्णन करने का प्रयास किया है, व्यास सदृश माने जाने चाहिए। चैतन्य लीला का वर्णन करने में श्रील वृन्दावन दास ठाकुर आदि व्यासदेव हैं और अन्य सारे भक्त जो कि श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं का वर्णन करके उनके पदचिह्नों का अनुसरण करते हैं, वे भी व्यासदेव कहलाये जाने चाहिए। प्रमाणित गुरु भी व्यास का प्रतिनिधि होने के कारण, व्यास कहलाता है। ऐसे गुरु के जन्म दिन की पूजा करना *व्यासपूजा* कहलाता है।

ताँर आगे यद्यपि सब लीलार भाण्डार ।
तथापि अल्प वर्णिया छाड़िलेन आर ॥ ८३ ॥
ताँर आगे य्रद्यपि सब लीलार भाण्डार ।
तथापि अल्प वर्णिया छाड़िलेन आर ॥ ८३ ॥

ताँर आगे—उनके आगे; **य्रद्यपि**—यद्यपि; **सब**—सब; **लीलार**—लीलाओं का; **भाण्डार**—भण्डार; **तथापि**—फिर भी; **अल्प**—बहुत अल्प; **वर्णिया**—वर्णन किया; **छाड़िलेन**—उन्होंने छोड़ दिया; **आर**—अन्य को।

अनुवाद

यद्यपि वृन्दावन दास ठाकुर के पास, अपनी सीमाओं के अन्तर्गत, श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं का पूरापूरा भण्डार था, किन्तु उन्होंने अधिकांश को छोड़कर केवल अल्पांश का वर्णन किया है।

যে কিছু বর্ণিলুঁ, সেহ সঙ্ক্ষেপ করিয়া ।
লিখিতে না পারেন, তবু রাখিয়াছেন লিখিয়া ॥ ৮৪ ॥

য়ে কিছু বর্ণিলুঁ, সেহ সঙ্ক্ষেপ করিয়া ।
লিখিতে না পারেন, তবু রাখিয়াছেন লিখিয়া ॥ ৮৪ ॥

য়ে কিছু বর্ণিলুঁ—মৈंने जो वर्णन किया है; **सेह**—उनका; **सङ्क्षेप**—संक्षेप में; **करिया**—करके; **लिखिते ना पारेन**—वृन्दावन दास ठाकुर ने वर्णन नहीं किया था; **तबु**—फिर भी; **राखियाछेन**—दिया है; **लिखिया**—लिखा हुआ।

अनुवाद

मैंने जिस अंश का वर्णन किया है, वह वृन्दावन दास ठाकुर द्वारा छोड़ दिया गया था। किन्तु उन्होंने इन लीलाओं का वर्णन न करने पर भी हमें एक सारांश प्रदान किया है।

চৈতন্য-মঙ্গলে তেঁহো লিখিয়াছে স্থানে-স্থানে ।
সেই বচন শুন, সেই পরম-প্রমাণে ॥ ৮৫ ॥

চৈতন্য-মঙ্গলে তেঁহো লিখিয়াছে স্থানে-স্থানে ।
সেই বচন শুন, সেই পরম-প্রমাণে ॥ ৮৫ ॥

चैतन्य-मङ्गले—*चैतन्य मंगल* नामक ग्रन्थ; **तेंहो**—वृन्दावन दास ठाकुर; **लिखियाछे**—ने लिखा है; **स्थाने-स्थाने**—कुछ स्थानों पर; **सेइ वचन शुन**—कृपया उन वचनों को सुनें; **सेइ परम-प्रमाणे**—यही सर्वश्रेष्ठ प्रमाण है।

अनुवाद

उन्होंने 'चैतन्य मंगल' (चैतन्य भागवत) नामक अपनी पुस्तक में अनेक स्थलों पर इन लीलाओं का वर्णन किया है। मैं अपने पाठकों से अनुरोध करता हूँ कि वे इस पुस्तक को सुनें, क्योंकि यह सर्वश्रेष्ठ प्रमाण है।

সঙ্ক্ষেপে কহিলুঁ, বিস্তার না যায় কথনে ।
বিস্তারিয়া বেদ-ব্যাস করিব বর্ণনে ॥ ৮৬ ॥

সঙ্ক্ষেপে কহিলুঁ, বিস্তার না য়ায় কথনে ।
বিস্তারিয়া বেদ-ব্যাস করিব বর্ণনে ॥ ৮৬ ॥

सङ्क्षेपे कहिलुँ—मैंने बहुत संक्षेप में वर्णन किया है; **विस्तार ना ग्राय कथने**—उनका पूरा वर्णन करना सम्भव नहीं है; **विस्तारिया**—विस्तार करेंगे; **वेद-व्यास**—व्यासदेव के प्रतिनिधि; **करिब**—करेंगे; **वर्णने**—वर्णन करने में।

अनुवाद

मैंने बहुत ही संक्षेप में लीलाओं का वर्णन किया है, क्योंकि उनका पूरी तरह से वर्णन कर पाना मेरे लिए असम्भव है। किन्तु भविष्य में वेदव्यास उनका विस्तार से वर्णन करेंगे।

চৈতন্য-মঙ্গলে ইহা লিখিয়াছে স্থানে-স্থানে ।
সত্য কহেন,—'আগে ব্যাস করিব বর্ণনে' ॥৮৭॥

चैतन्य-मङ्गले इहा लिखियाछे स्थाने-स्थाने ।
सत्य कहेन,—'आगे व्यास करिब वर्णने' ॥८७॥

चैतन्य-मङ्गले— *चैतन्य मंगल* नामक ग्रन्थ में, जो अब *चैतन्य भागवत* के नाम से जाना जाता है; **इहा**—यह कथन; **लिखियाछे**—लिखा है; **स्थाने-स्थाने**—अनेक स्थानों पर; **सत्य**—सत्य; **कहेन**—वे कहते हैं; **आगे**—भविष्य में; **व्यास करिब वर्णने**—व्यासदेव अधिक विस्तार से वर्णित करेंगे।

अनुवाद

चैतन्य मंगल में श्रील वृन्दावन दास ठाकुर ने अनेक स्थानों पर यह यथार्थ सत्य लिखा है कि भविष्य में व्यासदेव इनका विस्तार से वर्णन करेंगे।

तात्पर्य

आगे व्यास करिब वर्णने कथन *चैतन्य भागवत* के एक श्लोक (आदि खण्ड, अध्याय १, श्लोक १८०) जैसा है, जिसमें वृन्दावन दास ठाकुर कहते हैं :

शेषखण्डे चैतन्येर अनन्त विलास।
विस्तारिया वर्णिते आछेन वेदव्यास॥

"श्री चैतन्य महाप्रभु की अनन्त लीलाओं का वर्णन भविष्य में व्यासदेव द्वारा किया जायेगा।" श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर कहते हैं कि ये कथन यह

सूचित करते हैं कि भविष्य में व्यासदेव के अन्य प्रतिनिधि भगवान् चैतन्य की लीलाओं का विस्तार से वर्णन करेंगे। तात्पर्य यह है कि गुरु-शिष्य परम्परा में कोई शुद्ध भक्त, जो श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं का वर्णन करता है, वह व्यासदेव का प्रतिनिधि समझा जाता है।

चैतन्य-लीलामृत-सिन्धु—दुग्धाब्धि-समान ।
तृष्णानुरूप झारी भरि' तेंहो कैला पान ॥ ८८॥

चैतन्य-लीलामृत-सिन्धु—दुग्धाब्धि-समान ।
तृष्णानुरूप झारी भरि' तेंहो कैला पान ॥ ८८ ॥

चैतन्य-लीला-अमृत-सिन्धु—श्री चैतन्य महाप्रभु की अमृतमयी लीलाओं का सागर; **दुग्ध-अब्धि-समान**—दुग्ध के सागर के समान; **तृष्णा-अनुरूप**—अपनी तृष्णा के अनुसार; **झारी**—झारी, पात्र; **भरि'**—भरकर; **तेंहो**—उन्होंने; **कैला पान**—पान किया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की अमृतमयी लीलाओं का सागर क्षीर सागर के समान है। वृन्दावन दास ठाकुर ने अपनी तृष्णा के अनुसार अपनी झारी (पात्र) भरी और उस सागर से पान किया।

ताँर झारी-शेषामृत किछु मोरे दिला ।
ततेके भरिल पेट, तृष्णा मोर गेला ॥ ८९॥

ताँर झारी-शेषामृत किछु मोरे दिला ।
ततेके भरिल पेट, तृष्णा मोर गेला ॥ ८९ ॥

ताँर झारी-शेष-अमृत—वृन्दावन दास ठाकुर के पात्र का शेष दूध; **किछु**—कुछ; **मोरे दिला**—मुझे दिया है; **ततेके**—उस शेष से; **भरिल पेट**—मेरा पेट भर गया है; **तृष्णा मोर गेला**—अब मेरी प्यास बुझ गई है।

अनुवाद

वृन्दावन दास ठाकुर ने जो भी दुग्ध, उच्छिष्ट रूप में मेरे लिए छोड़ा है, वह मेरा पेट भरने के लिए पर्याप्त है। अब मेरी तृष्णा पूरी तरह से बुझ गई है।

अमि—अति-क्षुद्र जीव, पक्षी राङ्गा-टुनि ।
से यैछे तृष्णाय पिये समुद्रेर पानी ॥९०॥
तैछे आमि एक कण छुङिलुँ लीलार ।
एइ दृष्टान्ते जानिह प्रभुर लीलार विस्तार ॥९१॥

अमि—अति-क्षुद्र जीव, पक्षी राङ्गा-टुनि ।
से यैछे तृष्णाय पिये समुद्रेर पानी ॥९०॥
तैछे आमि एक कण छुङिलुँ लीलार ।
एइ दृष्टान्ते जानिह प्रभुर लीलार विस्तार ॥९१॥

आमि—मैं; **अति-क्षुद्र जीव**—एक अत्यन्त नगण्य जीव; **पक्षी राङ्गा-टुनि**—लाल चोंच वाले छोटे पक्षी जैसा; **से**—वह; **यैछे**—जिस तरह; **तृष्णाय**—तृष्णा में; **पिये**—पीता है; **समुद्रेर पानी**—समुद्र का पानी; **तैछे**—इसी तरह; **आमि**—मैं; **एक कण**—एक छोटे कण का; **छुङिलुँ**—स्पर्श किया है; **लीलार**—श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं का; **एइ दृष्टान्ते**—इस उदाहरण से; **जानिह**—आप सब जान सकते हैं; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **लीलार विस्तार**—लीलाओं का विस्तार।

अनुवाद

मैं छोटी लाल चोंच वाले पक्षी की तरह एक नगण्य जीव हूँ। जिस तरह यह पक्षी अपनी तृष्णा बुझाने के लिए समुद्र का जल पीता है, उसी तरह मैंने श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं के समुद्र में से केवल एक बूँद का स्पर्श किया है। इस उदाहरण से आप सब समझ सकते हैं कि श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ कितनी अपार विस्तीर्ण हैं।

'आमि लिखि',—एह मिथ्या करि अनुमान ।
आमार शरीर काष्ठ-पुतली-समान ॥९२॥

'आमि लिखि',—एह मिथ्या करि अनुमान ।
आमार शरीर काष्ठ-पुतली-समान ॥९२॥

आमि लिखि—मैं लिखता हूँ; **एह मिथ्या**—यह गलत है; **करि अनुमान**—मैं अनुमान करूँ; **आमार शरीर**—मेरा शरीर; **काष्ठ-पुतली-समान**—कठपूतली के समान ही है।

अनुवाद

मैं यह निष्कर्ष निकालूँ कि, "मैंने लिखा है" तो यह गलत ज्ञान है, क्योंकि मेरा शरीर तो कठपुतली के समान है।

বৃদ্ধ জরাতুর আমি অন্ধ, বধির ।
হস্ত হালে, মনো-বুদ্ধি নহে মোর স্থির ॥৯৩॥

वृद्ध जरातुर आमि अन्ध, बधिर ।
हस्त हाले, मनो-बुद्धि नहे मोर स्थिर ॥ ९३ ॥

वृद्ध—वृद्ध व्यक्ति; **जरा-आतुर**—असामर्थ्य से सताया गया; **आमि**—मैं; **अन्ध**—अन्ध; **बधिर**—बहरा; **हस्त हाले**—मेरे हाथ काँपते हैं; **मनः-बुद्धि**—मन तथा बुद्धि; **नहे**—नहीं; **मोर**—मेरे; **स्थिर**—स्थिर।

अनुवाद

मैं वृद्ध हो गया हूँ और असामर्थ्य से सताया हुआ हूँ। मैं लगभग अन्धा तथा बहरा हूँ, मेरे हाथ काँपते हैं और मेरे मन तथा बुद्धि अस्थिर हैं।

নানা-রোগ-গ্রস্ত,—চলিতে বসিতে না পারি ।
পঞ্চ-রোগ-পীড়া-ব্যাকুল, রাত্রি-দিনে মরি ॥৯৪॥

नाना-रोग-ग्रस्त,—चलिते वसिते ना पारि ।
पञ्च-रोग-पीड़ा-व्याकुल, रात्रि-दिने मरि ॥ ९४ ॥

नाना-रोग-ग्रस्त—अनेक रोगों से ग्रस्त; **चलिते**—चलने में; **वसिते**—बैठने में; **ना पारि**—मैं ठीक से सक्षम नहीं हूँ; **पञ्च-रोग-पीड़ा-व्याकुल**—पाँच प्रकार के रोगों से सदा व्याकुल; **रात्रि-दिने**—दिन या रात; **मरि**—मैं कभी भी मर सकता हूँ।

अनुवाद

अनेक रोगों से ग्रस्त होने के कारण न तो मैं ठीक से चल पाता हूँ, न ठीक से बैठ पाता हूँ। मैं सदैव पाँच प्रकार के रोगों से व्याकुल रहता हूँ। मैं दिन या रात में किसी भी समय मर सकता हूँ।

পূর্বে গ্রন্থে ইহা করিয়াছি নিবেদন ।
তথাপি লিখিয়ে, শুন ইহার কারণ ॥৯৫॥

पूर्वे ग्रन्थे इहा करियाछि निवेदन ।
तथापि लिखिये, शुन इहार कारण ॥ ९५ ॥

पूर्वे—पहले; **ग्रन्थे**—ग्रन्थ में; **इहा**—इस; **करियाछि निवेदन**—मैंने निवेदन किया है;

तथापि—फिर भी; **लिखिये**—मैं लिख रहा हूँ; **शुन**—कृपया सुनें; **इहार कारण**—इसका कारण।

अनुवाद

मैं पहले ही अपनी असमर्थताओं का लेखा-जोखा दे चुका हूँ। किन्तु फिर भी मैं लिख रहा हूँ, इसका कारण आप लोग कृपया सुनें।

श्री-गोविन्द, श्री-चैतन्य, श्री-नित्यानन्द ।
श्री-अद्वैत, श्री-भक्त, आर श्री-श्रोतृ-वृन्द ॥९६॥
श्री-स्वरूप, श्री-रूप, श्री-सनातन ।
श्री-रघुनाथ-दास श्री-गुरु, श्री-जीव-चरण ॥९७॥
इँहा-सवार चरण-कृपाय लेखाय आमारे ।
आर एक हय,—तेँहो अति-कृपा करे ॥९८॥

श्री-गोविन्द, श्री-चैतन्य, श्री-नित्यानन्द ।
श्री-अद्वैत, श्री-भक्त, आर श्री-श्रोतृ-वृन्द ॥ ९६ ॥
श्री-स्वरूप, श्री-रूप, श्री-सनातन ।
श्री-रघुनाथ-दास श्री-गुरु, श्री-जीव-चरण ॥ ९७ ॥
इँहा-सबार चरण-कृपाय लेखाय आमारे ।
आर एक हय,—तेंहो अति-कृपा करे ॥ ९८ ॥

श्री-गोविन्द—श्री गोविन्ददेव; **श्री-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **श्री-नित्यानन्द**—भगवान् नित्यानन्द; **श्री-अद्वैत**—अद्वैत आचार्य; **श्री-भक्त**—अन्य भक्तगण; **आर**—भी; **श्री-श्रोतृ-वृन्द**—इस ग्रन्थ के पाठकगण; **श्री-स्वरूप**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **श्री-रूप**—श्री रूप गोस्वामी; **श्री-सनातन**—श्री सनातन गोस्वामी; **श्री-रघुनाथ-दास**—श्री रघुनाथ दास गोस्वामी; **श्री-गुरु**—मेरे गुरु; **श्री-जीव-चरण**—श्री जीव गोस्वामी के चरणकमल; **इँहा सबार**—उन सब के; **चरण-कृपाय**—चरणकमलों की कृपा से; **लेखाय**—के कारण लिख रहा हूँ; **आमारे**—मुझे; **आर एक**—अन्य एक; **हय**—हुई है; **तेंहो**—वे; **अति-कृपा करे**—अति कृपा की है।

अनुवाद

मैं यह ग्रन्थ श्री गोविन्द देव, श्री चैतन्य महाप्रभु, भगवान् नित्यानन्द, श्री अद्वैत आचार्य, अन्य भक्तगण तथा इस ग्रन्थ के पाठकगण एवं श्री स्वरूप दामोदर गोस्वामी, श्री रूप गोस्वामी, श्री सनातन गोस्वामी, अपने

गुरु श्री रघुनाथ दास गोस्वामी तथा श्री जीव गोस्वामी के चरणकमलों की कृपा से लिख रहा हूँ। एक अन्य परम पुरुष ने भी मुझ पर विशेष कृपा की है।

श्री-मदन-गोपाल मोरे लेखाय आज्ञा करि' ।
कहिते ना युयाय, तबु रहिते ना पारि ॥९९॥

श्री-मदन-गोपाल मोरे लेखाय आज्ञा करि' ।
कहिते ना युयाय, तबु रहिते ना पारि ॥ ९९ ॥

श्री-मदन-गोपाल—वृन्दावन के मदनमोहन विग्रह; **मोरे**—मुझे; **लेखाय**—लिखवाया; **आज्ञा करि'**—आदेश देकर; **कहिते**—कहना; **ना युयाय**—उचित नहीं है; **तबु**—फिर भी; **रहिते**—मौन रहना; **ना पारि**—मैं समर्थ नहीं हूँ।

अनुवाद

वृन्दावन के श्री मदनमोहन अर्चाविग्रह ने मुझे आदेश दिया, जिसके कारण मैं यह ग्रन्थ लिखने को बाध्य हुआ। यद्यपि इसको प्रकट नहीं करना चाहिए था, किन्तु मैं प्रकट कर रहा हूँ, क्योंकि मैं मौन नहीं रह सकता।

ना कहिले हय मोर कृत-घ्नता-दोष ।
दम्भ करि बलि' श्रोता, ना करिह रोष ॥१००॥

ना कहिले हय मोर कृत-घ्नता-दोष ।
दम्भ करि बलि' श्रोता, ना करिह रोष ॥ १०० ॥

ना कहिले—यदि मैं नहीं कहता; **हय**—होता है; **मोर**—मेरा; **कृत-घ्नता-दोष**—अकृतज्ञता का दोष; **दम्भ करि**—मैं गर्वित हूँ; **बलि'**—मानकर; **श्रोता**—हे पाठकों; **ना करिह रोष**—रुष्ट न हों।

अनुवाद

यदि मैं इस बात को प्रकट न करता, तो मैं भगवान् के प्रति अकृतज्ञता का दोषी होता। इसीलिए हे पाठकों, आपलोग मुझे अधिक गर्वित मानकर मुझ पर रुष्ट न हों।

তোমা-সবার চরণ-ধূলি করিনু বন্দন ।
তাতে চৈতন্য-লীলা হৈল যে কিছু লিখন ॥ ১০১ ॥

তোমা-সবার চরণ-ধূলি করিনু বন্দন ।
তাতে চৈতন্য-লীলা হৈল যে কিছু লিখন ॥ ১০১ ॥

তোমা-সবার—आप सब के; **चरण-धूलि**—चरणों की धूलि; **करिनु वन्दन**—मैंने वन्दना की है; **ताते**—उस कारण से; **चैतन्य-लीला**—श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ; **हैल**—हुई; **ये**—जो भी; **किछु**—कुछ; **लिखन**—लिखा।

अनुवाद

क्योंकि मैंने आप सबों के चरणकमलों की वन्दना की है, इसीलिए मैंने श्री चैतन्य महाप्रभु के विषय में जो कुछ लिखा है, वह सम्भव हो पाया है।

এবে অন্ত্য-লীলা-গণের করি অনুবাদ ।
'অনুবাদ' কৈলে পাই লীলার 'আস্বাদ' ॥ ১০২ ॥

এবে অন্ত্য-লীলা-গণের করি অনুবাদ ।
'অনুবাদ' কৈলে পাই লীলার 'আস্বাদ' ॥ ১০২ ॥

এবে—अब; **अन्त्य-लीला-गणेर करि अनुवाद**—इस अन्त्य लीला की सारी लीलाओं को दुहराता हूँ; **अनुवाद कैले**—इसे दुहराने से; **पाइ**—मैं पाता हूँ; **लीलार**—लीलाओं का; **आस्वाद**—आस्वादन।

अनुवाद

अब मैं अन्त्य लीला की समस्त लीलाओं को दुहराता हूँ, क्योंकि ऐसा करने से मैं उन लीलाओं का पुनः आस्वादन कर सकूँगा।

প্রথম পরিচ্ছেদে—রূপের দ্বিতীয়-মিলন ।
তার মধ্যে দুই-নাটকের বিধান-শ্রবণ ॥ ১০৩ ॥

প্রথম পরিচ্ছেদে—রূপের দ্বিতীয়-মিলন ।
তার মধ্যে দুই-নাটকের বিধান-শ্রবণ ॥ ১০৩ ॥

प्रथम परिच्छेदे—प्रथम अध्याय में; **रूपेर**—रूप गोस्वामी का; **द्वितीय-मिलन**—

भगवान् चैतन्य के साथ दूसरा मिलन; **तार मध्ये**—इस अध्याय में; **दुइ-नाटकेर**—दो नाटकों का; **विधान-श्रवण**—लिखे हुए को सुना।

अनुवाद

प्रथम अध्याय में बताया गया है कि रूप गोस्वामी किस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु से दूसरी बार मिले और किस तरह महाप्रभु ने उनके दो नाटकों (विदग्ध माधव तथा ललित माधव) को सुना।

তার মধ্যে শিবানন্দ-সঙ্গে কুক্কুর আইলা ।
প্রভু তারে কৃষ্ণ কহাঞা মুক্ত করিলা ॥ ১০৪॥

তার মধ্যে শিবানন্দ-সঙ্গে কুক্কুর আইলা ।
প্রভু তারে কৃষ্ণ কহাঞা মুক্ত করিলা ॥ ১০৪॥

তার মধ্যে—इस अध्याय में; **शिवानन्द-सङ्गे**—शिवानन्द सेन के साथ; **कुक्कुर**—कुत्ता; **आइला**—आया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **तारे**—उसको (कुत्ते को); **कृष्ण कहाञा**—कृष्ण नाम का उच्चारण करवाया; **मुक्त करिला**—मुक्त हो गया।

अनुवाद

इसी अध्याय में शिवानन्द सेन के कुत्ते की घटना का भी उल्लेख है, जिससे महाप्रभु ने कृष्ण के पवित्र नाम का उच्चारण कराया और इस तरह वह कुत्ता मुक्त हो गया।

দ্বিতীয়ে—ছোট-হরিদাসে করাইলা শিক্ষণ ।
তার মধ্যে শিবানন্দের আশ্চর্য দর্শন ॥ ১০৫॥

দ্বিতীয়ে—ছোট-হরিদাসে করাইলা শিক্ষণ ।
তার মধ্যে শিবানন্দের আশ্চর্য্য দর্শন ॥ ১০৫॥

द्वितीये—दूसरे अध्याय में; **छोट-हरिदासे**—छोटा हरिदास; **कराइला शिक्षण**—उन्होंने सख्त शिक्षा दी; **तार मध्ये**—इसी अध्याय में; **शिवानन्देर**—शिवानन्द सेन का; **आश्चर्य्य दर्शन**—अद्भुत दर्शन।

अनुवाद

दूसरे अध्याय में महाप्रभु ने शिक्षा देने के उद्देश्य से छोटे हरिदास को

दण्ड दिया। इसी अध्याय में शिवानन्द सेन के अद्भुत दर्शन का वर्णन भी है।

তৃতীয়ে—হরিদাসের মহিমা প্রচণ্ড ।
দামোদর-পণ্ডিত কৈলা প্রভুরে বাক্য-দণ্ড ॥ ১০৬ ॥

तृतीये—हरिदासेर महिमा प्रचण्ड ।
दामोदर-पण्डित कैला प्रभुरे वाक्य-दण्ड ॥ १०६ ॥

तृतीये—तीसरे अध्याय में; **हरिदासेर**—हरिदास ठाकुर का; **महिमा प्रचण्ड**—प्रचण्ड महिमा; **दामोदर-पण्डित**—दामोदर पण्डित; **कैला**—किया; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **वाक्य-दण्ड**—शब्दों द्वारा आलोचना।

अनुवाद

तीसरे अध्याय में हरिदास ठाकुर की प्रचण्ड महिमाओं का वर्णन हुआ है। इसमें इसका भी उल्लेख है कि दामोदर पण्डित ने किस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु की आलोचना की।

প্রভু 'নাম' দিয়া কৈলা ব্রহ্মাণ্ড-মোচন ।
হরিদাস করিলা নামের মহিমা-স্থাপন ॥ ১০৭ ॥

प्रभु 'नाम' दिया कैला ब्रह्माण्ड-मोचन ।
हरिदास करिला नामेर महिमा-स्थापन ॥ १०७ ॥

प्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु; **नाम दिया**—पवित्र नाम प्रदान किया; **कैला**—किया; **ब्रह्माण्ड-मोचन**—ब्रह्माण्ड का उद्धार; **हरिदास**—हरिदास; **करिला**—किया; **नामेर**—पवित्र नाम के; **महिमा-स्थापन**—महिमा की स्थापना।

अनुवाद

इस तीसरे अध्याय में इसका भी वर्णन है कि चैतन्य महाप्रभु ने किस तरह ब्रह्माण्ड को भगवान् का पवित्र नाम प्रदान करके हर एक का उद्धार किया। इसमें इसका भी वर्णन है कि हरिदास ठाकुर ने अपने व्यावहारिक दृष्टान्त से किस तरह पवित्र नाम की महिमा की स्थापना की।

চতুর্থে—শ্রী-সনাতনের দ্বিতীয়-মিলন ।
দেহ-ত্যাগ হৈতে তাঁর করিলা রক্ষণ ॥ ১০৮॥

चतुर्थे—श्री-सनातनेर द्वितीय-मिलन ।
देह-त्याग हैते ताँर करिला रक्षण ॥ १०८॥

चतुर्थे—चौथे अध्याय में; **श्री-सनातनेर**—सनातन गोस्वामी की; **द्वितीय-मिलन**—द्वितीय भेंट; **देह-त्याग हैते**—आत्महत्या करने से; **ताँर करिला रक्षण**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने रक्षा की।

अनुवाद

चौथे अध्याय में श्री चैतन्य महाप्रभु से सनातन गोस्वामी की द्वितीय भेंट तथा सनातन द्वारा आत्महत्या किये जाने से महाप्रभु द्वारा उन्हें बचाने का वर्णन हुआ है।

জ্যৈষ্ঠ-মাসের ধূপে তাঁরে কৈলা পরীক্ষণ ।
শক্তি সঞ্চারিয়া পুনঃ পাঠাইলা বৃন্দাবন ॥ ১০৯॥

ज्यैष्ठ-मासेर धूपे ताँरे कैला परीक्षण ।
शक्ति सञ्चारिया पुनः पाठाइला वृन्दावन ॥ १०९॥

ज्यैष्ठ-मासेर—मई-जून महीने की; **धूपे**—धूप में; **ताँरे**—उनकी; **कैला**—की; **परीक्षण**—परीक्षा; **शक्ति**—शक्ति; **सञ्चारिया**—उनको देकर; **पुनः**—पुनः; **पाठाइला वृन्दावन**—वृन्दावन वापस भेज दिया।

अनुवाद

चौथे अध्याय में यह भी बतलाया गया है कि ज्येष्ठ मास (मई-जून) की धूप में सनातन गोस्वामी की किस तरह परीक्षा ली गई और तब उन्हें शक्ति प्रदान करके पुनः वृन्दावन भेज दिया गया।

পঞ্চমে—প্রদ্যুম্ন-মিশ্রে প্রভু কৃপা করিলা ।
রায়-দ্বারা কৃষ্ণ-কথা তাঁরে শুনাইলা ॥ ১১০॥

पञ्चमे—प्रद्युम्न-मिश्रे प्रभु कृपा करिला ।
राय-द्वारा कृष्ण-कथा ताँरे शुनाइला ॥ ११०॥

पञ्चमे—पाँचवे अध्याय में; **प्रद्युम्न-मिश्रे**—प्रद्युम्न मिश्र को; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कृपा करिला**—कृपा की; **राय-द्वारा**—रामानन्द राय की सहायता से; **कृष्ण-कथा**—कृष्ण कथा; **ताँरे शुनाइला**—सुनवाई।

अनुवाद

पाँचवे अध्याय में बताया गया है कि महाप्रभु ने प्रद्युम्न मिश्र पर किस तरह कृपा की और रामानन्द राय से उसे कृष्ण कथा सुनवाई।

তার মধ্যে 'বাঙ্গাল'-কবির নাটক-উপেক্ষণ ।
স্বরূপ-গোসাঞি কৈলা বিগ্রহের মহিমা-স্থাপন ॥ ১১১ ॥

तार मध्ये 'बाङ्गाल'-कविर नाटक-उपेक्षण ।
स्वरूप-गोसाञि कैला विग्रहेर महिमा-स्थापन ॥ १११ ॥

तार मध्ये—इस अध्याय में; **बाङ्गाल-कविर**—बंगाल के एक कवि का; **नाटक-उपेक्षण**—नाटक का अस्वीकार; **स्वरूप-गोसाञि**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **कैला**—किया; **विग्रहेर**—विग्रह के; **महिमा-स्थापन**—महिमा की स्थापना।

अनुवाद

इसी अध्याय में यह भी वर्णन किया गया है कि स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने एक बंगाली कवि के नाटक को अस्वीकार करके किस तरह अर्चाविग्रह की महिमा की स्थापना की।

ষষ্ঠে—রঘুনাথ-দাস প্রভুরে মিলিলা ।
নিত্যানন্দ-আজ্ঞায় চিড়া-মহোৎসব কৈলা ॥ ১১২ ॥

षष्ठे—रघुनाथ-दास प्रभुरे मिलिला ।
नित्यानन्द-आज्ञाय चिड़ा-महोत्सव कैला ॥ ११२ ॥

षष्ठे—छठे अध्याय में; **रघुनाथ-दास**—रघुनाथ दास गोस्वामी; **प्रभुरे मिलिला**—श्री चैतन्य महाप्रभु को मिले; **नित्यानन्द-आज्ञाय**—नित्यानन्द प्रभु की आज्ञा से; **चिड़ा-महोत्सव कैला**—चिउड़ा उत्सव सम्पन्न किया।

अनुवाद

छठे अध्याय में रघुनाथ दास गोस्वामी की श्री चैतन्य महाप्रभु से भेंट

का तथा नित्यानन्द प्रभु के आदेश पर चिउड़ा उत्सव सम्पन्न किये जाने का वर्णन हुआ है।

দামোদর-স্বরূপ-ঠাঞি তাঁরে সমর্পিল ।
'গোবর্ধন-শিলা', 'গুঞ্জা-মালা' তাঁরে দিল ॥ ১১৩॥

দামোদর-স্বরূপ-ঠাঞি তাঁরে সমর্পিল ।
'গোবর্ধন-শিলা', 'গুঞ্জা-মালা' তাঁরে দিল ॥ ১১৩॥

दामोदर-स्वरूप-ठाञि—स्वरूप दामोदर गोस्वामी के संरक्षण में; **ताँरे समर्पिल**—महाप्रभु ने दिया; **गोवर्धन-शिला**—गोवर्धन शिला; **गुञ्जा-माला**—छोटे शंखों की माला; **ताँरे दिल**—उन्हें प्रदान किया।

अनुवाद

उस अध्याय में यह भी बताया गया है कि महाप्रभु ने किस तरह रघुनाथ दास गोस्वामी को स्वरूप दामोदर गोस्वामी के संरक्षण में रख दिया और उन्हें गोवर्धन पर्वत का एक पत्थर तथा घुंघुची (छोटे शंख) की माला प्रदान की।

সপ্তম-পরিচ্ছেদে——বল্লভ ভট্টের মিলন ।
নানা-মতে কৈলা তাঁর গর্ব খণ্ডন ॥ ১১৪॥

সপ্তম-পরিচ্ছেদে——বল্লভ ভট্টের মিলন ।
নানা-মতে কৈলা তাঁর গর্ব খণ্ডন ॥ ১১৪॥

सप्तम-परिच्छेदे—सातवें अध्याय में; **वल्लभ भट्टेर मिलन**—वल्लभ भट्ट की श्री चैतन्य महाप्रभु से भेंट; **नाना-मते**—नाना प्रकार से; **कैला**—किया; **ताँर**—उसका; **गर्व**—गर्व; **खण्डन**—खण्डन।

अनुवाद

सातवें अध्याय में श्री चैतन्य महाप्रभु की वल्लभ भट्ट से भेंट का तथा अनेक प्रकार से उसके मिथ्या गर्व के खण्डन का वर्णन हुआ है।

অষ্টমে——রামচন্দ্র-পুরীর আগমন ।
তাঁর ভয়ে কৈলা প্রভু ভিক্ষা সঙ্কোচন ॥ ১১৫॥

अष्टमे—रामचन्द्र-पुरीर आगमन ।
ताँर भये कैला प्रभु भिक्षा सङ्कोचन ॥ ११५ ॥

अष्टमे—आठवें अध्याय में; **रामचन्द्र-पुरीर आगमन**—रामचन्द्र पुरी का आगमन; **ताँर भये**—उनके भय से; **कैला**—किया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भिक्षा सङ्कोचन**—अपना खाना कम।

अनुवाद

आठवें अध्याय में रामचन्द्रपुरी के आगमन तथा उनके भय से श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा अपने भोजन में कमी करने का वर्णन है।

নবমে—গোপীনাথ-পট্টনায়ক-মোচন ।
ত্রিজগতের লোক প্রভুর পাইল দরশন ॥ ১১৬ ॥

नवमे—गोपीनाथ-पट्टनायक-मोचन ।
त्रिजगतेर लोक प्रभुर पाइल दरशन ॥ ११६ ॥

नवमे—नवें अध्याय में; **गोपीनाथ-पट्टनायक-मोचन**—रामानन्द राय के भाई गोपीनाथ पट्टनायक का उद्धार; **त्रि-जगतेर**—तीन लोकों के; **लोक**—लोग; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **पाइल दरशन**—दर्शन पाया।

अनुवाद

नवें अध्याय में गोपीनाथ पट्टनायक के उद्धार का तथा तीनों लोकों द्वारा श्री चैतन्य महाप्रभु के दर्शन का उल्लेख है।

দশমে—কহিলুঁ ভক্ত-দত্ত-আস্বাদন ।
রাঘব-পণ্ডিতের তাহাঁ ঝালির সাজন ॥ ১১৭ ॥

दशमे—कहिलुँ भक्त-दत्त-आस्वादन ।
राघव-पण्डितेर ताहाँ झालिर साजन ॥ ११७ ॥

दशमे—दसवें अध्याय में; **कहिलुँ**—मैंने वर्णन किया है; **भक्त-दत्त-आस्वादन**—भक्तों द्वारा दिये गये भोजन का आस्वादन; **राघव-पण्डितेर**—राघव पण्डित की; **ताहाँ**—वहाँ; **झालिर साजन**—थैलियों की विविध सामग्री।

अनुवाद

दसवें अध्याय में मैंने यह बताया है कि किस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु

ने अपने भक्तों द्वारा दिये हुए भोजन का आस्वादन किया और इसी के साथ मैंने इसका भी वर्णन किया है कि राघव पंडित की थैलियों में तरह-तरह के प्रसाद किस प्रकार सजाये गये थे।

তার মধ্যে গোবিন্দের কৈলা পরীক্ষণ ।
তার মধ্যে পরিমুণ্ডা-নৃত্যের বর্ণন ॥ ১১৮॥

তার মধ্যে গোবিন্দের কৈলা পরীক্ষণ ।
তার মধ্যে পরিমুণ্ডা-নৃত্যের বর্ণন ॥ ১১৮॥

তার মধ্যে—इसी अध्याय में; **গোবিন্দের**—उनके निजी सेवक गोविन्द की; **কৈলা**—की; **পরীক্ষণ**—परीक्षा; **তার মধ্যে**—इस अध्याय में; **পরিমুণ্ডা-নৃত্যের বর্ণন**—श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा मन्दिर में नृत्य करने का वर्णन।

अनुवाद

इसी अध्याय में महाप्रभु द्वारा गोविन्द की परीक्षा लिये जाने का तथा उनके द्वारा मन्दिर में नृत्य किये जाने का वर्णन हुआ है।

একাদশে—হরিদাস-ঠাকুরের নির্যাণ ।
ভক্ত-বাৎসল্য যাহাঁ দেখাইলা গৌর ভগবান্ ॥ ১১৯॥

একাদশে—হরিদাস-ঠাকুরের নির্য্যাণ ।
ভক্ত-বাৎসল্য য্যাহাঁ দেখাইলা গৌর ভগবান্ ॥ ১১৯॥

একাদশে—ग्यारहवें अध्याय में; **হরিদাস-ঠাকুরের নির্য্যাণ**—श्रील हरिदास ठाकुर का तिरोधान; **ভক্ত-বাৎসল্য**—भक्तों के प्रति स्नेह; **য্যাহাঁ**—जहाँ; **দেখাইলা**—प्रदर्शित किया; **গৌর ভগবান্**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्, श्री चैतन्य महाप्रभु।

अनुवाद

ग्यारहवें अध्याय में हरिदास ठाकुर के तिरोधान का तथा पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा अपने भक्तों पर स्नेह किये जाने का वर्णन है।

দ্বাদশে—জগদানন্দের তৈল-ভঞ্জন ।
নিত্যানন্দ কৈলা শিবানন্দেরে তাড়ন ॥ ১২০॥

द्वादशे—जगदानन्देर तैल-भञ्जन ।
नित्यानन्द कैला शिवानन्देरे ताड़न ॥ १२० ॥

द्वादशे—बारहवें अध्याय में; **जगदानन्देर**—जगदानन्द पण्डित द्वारा; **तैल-भञ्जन**—तेल पात्र तोड़ने का; **नित्यानन्द**—भगवान् नित्यानन्द; **कैला**—की; **शिवानन्देरे ताड़न**—शिवानन्द सेन की ताड़ना।

अनुवाद

बारहवें अध्याय में जगदानन्द पण्डित द्वारा तैल पात्र के तोड़े जाने का तथा भगवान् नित्यानन्द द्वारा शिवानन्द सेन की ताड़ना का वर्णन हुआ है।

त्रयोदशे—जगदानन्द मथुरा याइ' आइला ।
महाप्रभु देव-दासीर गीत शुनिला ॥ १२१ ॥

त्रयोदशे—तेरहवें अध्याय में; **जगदानन्द**—जगदानन्द पण्डित का; **मथुरा याइ'**—मथुरा जाने का; **आइला**—वापस आने का; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **देव-दासीर**—देवी दासी का; **गीत शुनिला**—गीत सुनने का।

अनुवाद

तेरहवें अध्याय में जगदानन्द पंडित के मथुरा जाने और लौटने का तथा संयोगवश श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा एक देवदासी युवती द्वारा गाये गये गीत के सुने जाने का उल्लेख हुआ है।

रघुनाथ-भट्टाचार्येर ताहाञि मिलन ।
प्रभु ताँरे कृपा करि' पाठाइला वृन्दावन ॥ १२२ ॥

रघुनाथ-भट्टाचार्येर—रघुनाथ भट्ट का; **ताहाञि**—वहाँ; **मिलन**—मिलन; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँरे**—उनको; **कृपा करि'**—अहैतुकी कृपा दर्शाकर; **पाठाइला वृन्दावन**—वृन्दावन भेजना।

अनुवाद

इसी तेरहवें अध्याय में रघुनाथ भट्ट की श्री चैतन्य महाप्रभु से भेंट और महाप्रभु की अहैतुकी कृपा से उनके वृन्दावन भेजे जाने का भी वर्णन है।

চতুর্দশে—দিব্যোন্মাদ-আরম্ভ বর্ণন ।
'শরীর' এথা প্রভুর, 'মন' গেলা বৃন্দাবন ॥ ১২৩ ॥

चतुर्दशे—दिव्योन्माद-आरम्भ वर्णन ।
'शरीर' एथा प्रभुर, 'मन' गेला वृन्दावन ॥ १२३ ॥

चतुर्दशे—चौदहवें अध्याय में; **दिव्य-उन्माद-आरम्भ**—श्री चैतन्य महाप्रभु के दिव्योन्माद का प्रारम्भ; **वर्णन**—वर्णन किया है; **शरीर**—शरीर; **एथा**—यहाँ; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **मन**—मन; **गेला**—गया; **वृन्दावन**—वृन्दावन को।

अनुवाद

चौदहवें अध्याय में महाप्रभु के दिव्योन्माद के प्रारम्भ का वर्णन है, जिसमें उनका शरीर तो जगन्नाथ पुरी में रहता, किन्तु उनका मन वृन्दावन में होता था।

তার মধ্যে প্রভুর সিংহ-দ্বারে পতন ।
অস্থি-সন্ধি-ত্যাগ, অনুভাবের উদগম ॥ ১২৪ ॥

तार मध्ये प्रभुर सिंह-द्वारे पतन ।
अस्थि-सन्धि-त्याग, अनुभावेर उद्‌गम ॥ १२४ ॥

तार मध्ये—इसी अध्याय में; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **सिंह-द्वारे पतन**—सिंहद्वार पर गिरने का; **अस्थि-सन्धि**—हड्डियों के जोड़ों का; **त्याग**—अलग होना; **अनुभावेर उद्‌गम**—ध्यान तथा भाव के उदय का।

अनुवाद

इसी अध्याय में श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा जगन्नाथ मन्दिर के सिंहद्वार के सामने गिरने, उनकी हड्डियों के जोड़ों के अलग होने तथा महाप्रभु में विविध दिव्य लक्षणों के उदय होने का भी वर्णन है।

চটক-পর্বত দেখি' প্রভুর ধাবন ।
তার মধ্যে প্রভুর কিছু প্রলাপ-বর্ণন ॥১২৫॥

चटक-पर्वत देखि' प्रभुर धावन ।
तार मध्ये प्रभुर किछु प्रलाप-वर्णन ॥ १२५ ॥

चटक-पर्वत—चटक पर्वत नामक टीला; **देखि'**—देखकर; **प्रभुर धावन**—श्री चैतन्य महाप्रभु का दौड़ना; **तार मध्ये**—उस अध्याय में; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **किछु**—कुछ; **प्रलाप वर्णन**—उन्मत्त की तरह बोलना।

अनुवाद

इसी में श्री चैतन्य महाप्रभु का चटक पर्वत की ओर भागने तथा पागल की तरह बातें करने का भी वर्णन हुआ है।

পঞ্চদশ-পরিচ্ছেদে——উদ্যান-বিলাসে ।
বৃন্দাবন-ভ্রমে যাহাঁ করিলা প্রবেশে ॥১২৬॥

पञ्चदश-परिच्छेदे——उद्यान-विलासे ।
वृन्दावन-भ्रमे याहाँ करिला प्रवेशे ॥ १२६ ॥

पञ्चदश-परिच्छेदे—पन्द्रहवें अध्याय में; **उद्यान-विलासे**—उद्यान में उनकी लीलाओं में; **वृन्दावन-भ्रमे**—उनके द्वारा उद्यान को वृन्दावन मान लेना; **याहाँ**—जहाँ; **करिला प्रवेशे**—वे प्रविष्ट हुए।

अनुवाद

पन्द्रहवें अध्याय में श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा समुद्र के किनारे के एक उद्यान में प्रवेश करने का तथा उसे वृन्दावन मान लेने का वर्णन हुआ है।

তার মধ্যে প্রভুর পঞ্চেন্দ্রিয়-আকর্ষণ ।
তার মধ্যে করিলা রাসে কৃষ্ণ-অন্বেষণ ॥১২৭॥

तार मध्ये प्रभुर पञ्चेन्द्रिय-आकर्षण ।
तार मध्ये करिला रासे कृष्ण-अन्वेषण ॥ १२७ ॥

तार मध्ये—उसमें; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **पञ्च-इन्द्रिय-आकर्षण**—पाँचों इन्द्रियों का आकर्षण; **तार मध्ये**—इस अध्याय में; **करिला**—की; **रासे**—रास नृत्य में; **कृष्ण-अन्वेषण**—कृष्ण की खोज।

अनुवाद

इसी अध्याय में श्री चैतन्य महाप्रभु की पाँचों इन्द्रियों का कृष्ण के प्रति आकर्षण का तथा रास नृत्य में उनके द्वारा कृष्ण की खोज का वर्णन हुआ है।

ষোড়শে—কালিদাসে প্রভু কৃপা করিলা ।
বৈষ্ণবোচ্ছিষ্ট খাইবার ফল দেখাইলা ॥ ১২৮॥

ষোড়শে—কালিদাসে প্রভু কৃপা করিলা ।
বৈষ্ণবোচ্ছিষ্ট খাইবার ফল দেখাইলা ॥ ১২৮॥

ষোড়শে—सोलहवें अध्याय में; **কালিদাসে**—कालिदास पर; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **কৃপা করিলা**—कृपा की; **বৈষ্ণব-উচ্ছিষ্ট খাইবার**—वैष्णवों का शेष खाने का; **ফল দেখাইলা**—फल दिखाया।

अनुवाद

सोलहवें अध्याय में बताया गया है कि श्री चैतन्य महाप्रभु ने किस तरह से कालिदास पर अपनी कृपा प्रदर्शित की और इस प्रकार वैष्णवों का उच्छिष्ट खाने के फल का प्रदर्शन किया।

শিবানন্দের বালকে শ্লোক করাইলা ।
সিংহ-দ্বারে দ্বারী প্রভুরে কৃষ্ণ দেখাইলা ॥ ১২৯॥

শিবানন্দের বালকে শ্লোক করাইলা ।
সিংহ-দ্বারে দ্বারী প্রভুরে কৃষ্ণ দেখাইলা ॥ ১২৯॥

শিবানন্দের—शिवानन्द सेन का; **বালকে**—पुत्र; **শ্লোক করাইলা**—श्लोक रचा; **সিংহ-দ্বারে**—जगन्नाथ मन्दिर के सिंहद्वार पर; **দ্বারী**—चौकीदार ने; **প্রভুরে**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **কৃষ্ণ দেখাইলা**—भगवान् कृष्ण का दर्शन कराया।

अनुवाद

इस अध्याय में इसका भी वर्णन है कि शिवानन्द के पुत्र ने किस तरह एक श्लोक रचा और किस तरह सिंहद्वार के रक्षक ने श्री चैतन्य महाप्रभु को कृष्ण का दर्शन कराया।

महा-प्रसादेर ताहाँ महिमा वर्णिला ।
कृष्णाधरामृतेर फल-श्लोक आस्वादिला ॥ १३० ॥

महा-प्रसादेर ताहाँ महिमा वर्णिला ।
कृष्णाधरामृतेर फल-श्लोक आस्वादिला ॥ १३० ॥

महा-प्रसादेर—भगवान् के महाप्रसाद का; **ताहाँ**—वहाँ; **महिमा**—महिमा; **वर्णिला**—वर्णन किया; **कृष्ण-अधर-अमृतेर**—कृष्ण के अधरामृत के; **फल-श्लोक**—फल का निर्देश करनेवाला श्लोक; **आस्वादिला**—आस्वादन किया।

अनुवाद

इसी अध्याय में महाप्रसाद की महिमा का वर्णन है और उनके द्वारा कृष्ण के अधरामृत के प्रभाव का वर्णन करने वाले एक श्लोक का आस्वादन किया गया है।

सप्तदशे—गाभी-मध्ये प्रभुर पतन ।
कूर्माकार-अनुभावेर ताहाञि उदगम ॥ १३१ ॥

सप्तदशे—गाभी-मध्ये प्रभुर पतन ।
कूर्माकार-अनुभावेर ताहाञि उद्गम ॥ १३१ ॥

सप्तदशे—सत्रहवें अध्याय में; **गाभी-मध्ये**—गायों के बीच; **प्रभुर पतन**—श्री चैतन्य महाप्रभु का गिरना; **कूर्म-आकार-अनुभावेर**—कुछुए के रूप में भावावेश का; **ताहाञि**—वहाँ; **उद्गम**—उदय होना।

अनुवाद

सत्रहवें अध्याय में श्री चैतन्य महाप्रभु का गायों के बीच गिरने तथा भावावेश उदय होने पर उनके द्वारा कछुए का रूप धारण करने का उल्लेख हुआ है।

कृष्णेर शब्द-गुणे प्रभुर मन आकर्षिला ।
"का स्त्र्यङ्ग ते" श्लोकेर अर्थ आवेशे करिला ॥ १३२ ॥

कृष्णेर शब्द-गुणे प्रभुर मन आकर्षिला ।
"का स्त्र्यङ्ग ते" श्लोकेर अर्थ आवेशे करिला ॥ १३२ ॥

कृष्णेर—भगवान् कृष्ण की; **शब्द-गुणे**—ध्वनि के गुणों द्वारा; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **मन**—मन; **आकर्षिला**—आकृष्ट हुआ; **का स्म्र् अङ्ग ते श्लोकेर**—*कास्त्यङ्ग ते* शब्दों से शुरू होने वाले श्लोक का; **अर्थ**—अर्थ; **आवेशे**—आवेश में; **करिला**—वर्णन किया।

अनुवाद

इसी अध्याय में कृष्ण की ध्वनि के गुणों द्वारा श्री चैतन्य महाप्रभु के मन के आकृष्ट होने का तथा भावावेश में उनके द्वारा "कास्त्यङ्ग ते" श्लोक का अर्थ करने का भी वर्णन हुआ है।

ভাব-শাবল্যে পুনঃ কৈলা প্রলপন ।
কর্ণামৃত-শ্লোকের অর্থ কৈলা বিবরণ ॥ ১৩৩ ॥

भाव-शाबल्ये पुनः कैला प्रलपन ।
कर्णामृत-श्लोकेर अर्थ कैला विवरण ॥ १३३ ॥

भाव-शाबल्ये—सर्व भावों के समुच्चय से; **पुनः**—पुनः; **कैला प्रलपन**—उन्होंने उन्मत्त की तरह बातें की; **कर्णामृत-श्लोकेर**—*कृष्ण कर्णामृत* के एक श्लोक का; **अर्थ**—अर्थ; **कैला विवरण**—विस्तार से वर्णन किया।

अनुवाद

सत्रहवें अध्याय में विविध भावों के संमिश्रण से श्री चैतन्य महाप्रभु का पुनः प्रलाप करना तथा कृष्णकर्णामृत के एक श्लोक की विस्तृत व्याख्या किये जाने का भी वर्णन हुआ है।

অষ্টাদশ পরিচ্ছেদে—সমুদ্রে পতন ।
কৃষ্ণ-গোপী-জল-কেলি তাহাঁ দরশন ॥ ১৩৪ ॥

अष्टादश परिच्छेदे—समुद्रे पतन ।
कृष्ण-गोपी-जल-केलि ताहाँ दरशन ॥ १३४ ॥

अष्टादश परिच्छेदे—अठारहवें अध्याय में; **समुद्रे पतन**—महाप्रभु का समुद्र में गिरना; **कृष्ण-गोपी-जल-केलि**—कृष्ण तथा गोपियों की जलक्रीडा; **ताहाँ दरशन**—वहाँ देखने का।

अनुवाद

अठारहवें अध्याय में महाप्रभु के समुद्र में गिरने का तथा आवेश में

स्वप्न में कृष्ण तथा गोपियों के मध्य जल क्रीड़ा के देखे जाने का वर्णन हुआ है।

তাহাঙি দেখিলা কৃষ্ণের বন্য-ভোজন ।
জালিয়া উঠাইল, প্রভু আইলা স্ব-ভবন ॥১৩৫॥

তাহাঙি দেখিলা কৃষ্ণের বন্য-ভোজন ।
জালিয়া উঠাইল, প্রভু আইলা স্ব-ভবন ॥ ১৩৫ ॥

তাহাঙি—वहाँ; **দেখিলা**—उन्होंने देखा; **কৃষ্ণের**—कृष्ण का; **বন্য-ভোজন**—वन्य-भोजन; **জালিয়া**—मछुआरा; **উঠাইল**—उनको पकड़ा; **প্রভু**—महाप्रभु; **আইলা**—वापस आये; **স্ব-ভবন**—अपने निवासस्थान पर।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने उस स्वप्न में कृष्ण को जंगल में वन्य-भोजन का आनन्द लेते देखा। जब श्री चैतन्य महाप्रभु समुद्र में तैरने लगे, तब एक मछुआरे ने उन्हें पकड़ा और उसके बाद महाप्रभु अपने घर लौट आये। यह सब अठारहवें अध्याय में वर्णित हुआ है।

ঊনবিংশে—ভিত্ত্যে প্রভুর মুখ-সঙ্ঘর্ষণ ।
কৃষ্ণের বিরহ-স্ফূর্তি-প্রলাপ-বর্ণন ॥১৩৬॥

ঊনবিংশে—ভিত্ত্যে প্রভুর মুখ-সঙ্ঘর্ষণ ।
কৃষ্ণের বিরহ-স্ফূর্তি-প্রলাপ-বর্ণন ॥ ১৩৬ ॥

ঊনবিংশে—उन्नीसवें अध्याय में; **ভিত্ত্যে**—दीवारों पर; **প্রভুর মুখ-সঙ্ঘর্ষণ**—महाप्रभु का मुँह रगड़ना; **কৃষ্ণের বিরহ-স্ফূর্তি**—कृष्ण के विरह का उदय; **প্রলাপ-বর্ণন**—उन्मत्त की तरह बातें करना।

अनुवाद

उन्नीसवें अध्याय में इसका वर्णन है कि किस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु दीवालों से अपना मुँह रगड़ते तथा कृष्ण के विरह के फलस्वरूप उन्मत्त की तरह बातें करते थे।

বসন্ত-রজনীতে পুষ্পোদ্যানে বিহরণ ।
কৃষ্ণের সৌরভ্য-শ্লোকের অর্থ-বিবরণ ॥ ১৩৭॥

বসন্ত-রজনীতে পুষ্পোদ্যানে বিহরণ ।
কৃষ্ণের সৌরভ্য-শ্লোকের অর্থ-বিবরণ ॥ ১৩৭॥

বসন্ত-রজনীতে—বসন্ত ঋতু की रात में; **পুষ্প-উদ্যানে**—पुष्प उद्यान में; **বিহরণ**—विचरण करना; **কৃষ্ণের**—भगवान् कृष्ण के; **সৌরভ্য-শ্লোকের**—शरीर की सुगन्ध से सम्बन्धित एक श्लोक; **অর্থ-বিবরণ**—अर्थ का वर्णन करना।

अनुवाद

इसी अध्याय में वसन्त की रात में एक बगीचे में कृष्ण के विचरण करने का भी वर्णन है। इस में कृष्ण के शरीर की सुगन्ध से सम्बन्धित एक श्लोक के अर्थ का भी पूरा-पूरा वर्णन हुआ है।

বিংশ-পরিচ্ছেদে—নিজ-'শিক্ষাষ্টক' পড়িয়া ।
তার অর্থ আস্বাদিলা প্রেমাবিষ্ট হঞা ॥ ১৩৮॥

বিংশ-পরিচ্ছেদে—নিজ-'শিক্ষাষ্টক' পড়িয়া ।
তার অর্থ আস্বাদিলা প্রেমাবিষ্ট হঞা ॥ ১৩৮॥

বিংশ-পরিচ্ছেদে—बीसवें अध्याय में; **নিজ-শিক্ষাষ্টক পড়িয়া**—अपने ही *शिक्षाष्टक* के श्लोकों को पढ़ना; **তার অর্থ**—उनके अर्थ का; **আস্বাদিলা**—आस्वादन किया; **প্রেম-আবিষ্ট হঞা**—प्रेमावेश में निमग्न होकर।

अनुवाद

बीसवें अध्याय में श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने ही शिक्षाष्टक को सुनाया और प्रेमावेश में उसके अर्थों का आस्वादन किया।

ভক্তে শিখাইতে যেই শিক্ষাষ্টক কহিলা ।
সেই শ্লোকাষ্টকের অর্থ পুনঃ আস্বাদিলা ॥ ১৩৯॥

ভক্তে শিখাইতে যেই শিক্ষাষ্টক কহিলা ।
সেই শ্লোকাষ্টকের অর্থ পুনঃ আস্বাদিলা ॥ ১৩৯॥

ভক্তে—भक्तों को; **শিখাইতে**—शिक्षा देने के लिए; **যেই**—जो; **শিক্ষা-অষ্টক**—

शिक्षाष्टक; **कहिला**—वर्णन किया; **सेइ श्लोक-अष्टकेर**—उन्हीं आठ श्लोकों का; **अर्थ**—अर्थ; **पुनः आस्वादिला**—पुनः उन्होंने आस्वादन किया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने इन आठों श्लोकों की रचना भक्तों को शिक्षा देने के लिए की थी, किन्तु उन्होंने स्वयं भी उनके अर्थ का आस्वादन किया।

मुख्य-मुख्य-लीलार अर्थ करिलुँ कथन ।
'अनुवाद' हैते स्मरे ग्रन्थ-विवरण ॥ १४० ॥

मुख्य-मुख्य-लीलार अर्थ करिलुँ कथन ।
'अनुवाद' हैते स्मरे ग्रन्थ-विवरण ॥ १४० ॥

मुख्य-मुख्य-लीलार—श्री चैतन्य महाप्रभु की मुख्य लीलाओं का; **अर्थ**—अर्थ; **करिलुँ**—किया है; **कथन**—वर्णन; **अनुवाद हैते**—पुनरावृत्ति करने से; **स्मरे**—स्मरण में रहता है; **ग्रन्थ-विवरण**—ग्रन्थ का विवरण।

अनुवाद

इस तरह मैंने मुख्य लीलाओं तथा उनके अर्थ का वर्णन किया है, क्योंकि ऐसी पुनरावृत्ति से ग्रन्थ के विवरणों को स्मरण में रखा जा सकता है।

एक एक परिच्छेदेर कथा—अनेक-प्रकार ।
मुख्य-मुख्य कहिलुँ, कथा ना याय विस्तार ॥ १४१ ॥

एक एक परिच्छेदेर कथा—अनेक-प्रकार ।
मुख्य-मुख्य कहिलुँ, कथा ना याय विस्तार ॥ १४१ ॥

एक एक परिच्छेदेर—प्रत्येक अध्याय में; **कथा**—कथा; **अनेक-प्रकार**—अनेक प्रकार की; **मुख्य-मुख्य कहिलुँ**—मैंने केवल मुख्य कथाओं को दोहराया है; **कथा**—वर्णन; **ना याय**—सम्भव नहीं है; **विस्तार**—विस्तार।

अनुवाद

प्रत्येक अध्याय में अनेक प्रकार की कथाएँ हैं, किन्तु मैंने केवल

उन्हीं को दोहराया है, जो मुख्य हैं, क्योंकि उन सबों का पुनः वर्णन नहीं किया जा सकता था।

श्री-राधा-सह 'श्री-मदन-मोहन' ।
श्री-राधा-सह 'श्री-गोविन्द'-चरण ॥ १४२॥
श्री-राधा-सह श्रील 'श्री-गोपीनाथ' ।
एइ तिन ठाकुर हय 'गौड़िया'र नाथ' ॥ १४३॥

श्री-राधा-सह 'श्री-मदन-मोहन' ।
श्री-राधा-सह 'श्री-गोविन्द'-चरण ॥ १४२॥
श्री-राधा-सह श्रील 'श्री-गोपीनाथ' ।
एइ तिन ठाकुर हय 'गौड़ियार नाथ' ॥ १४३॥

श्री-राधा-सह—श्रीमती राधारानी के साथ; **श्री-मदन-मोहन**—मदनमोहन जी विग्रह; **श्री-राधा-सह**—श्रीमती राधारानी के साथ; **श्री-गोविन्द-चरण**—श्री गोविन्द जी के चरणकमल; **श्री-राधा-सह**—श्रीमती राधारानी के साथ; **श्रील श्री-गोपीनाथ**—सर्वथा सुन्दर तथा ऐश्वर्यमय गोपीनाथ जी; **एइ तिन**—ये तीनों; **ठाकुर**—विग्रह; **हय**—हैं; **गौड़ियार नाथ**—सारे गौड़ीय वैष्णवें के आराध्य।

अनुवाद

वृन्दावन में श्रीमती राधारानी के साथ मदनमोहन, श्रीमती राधारानी के साथ गोविन्द तथा श्रीमती राधारानी के साथ गोपीनाथ के अर्चाविग्रह गौड़ीय वैष्णवों के प्राण हैं।

श्री-कृष्ण-चैतन्य, श्री-युत नित्यानन्द ।
श्री-अद्वैत-आचार्य, श्री-गौर-भक्त-वृन्द ॥ १४४॥
श्री-स्वरूप, श्री-रूप, श्री-सनातन ।
श्री-गुरु श्री-रघुनाथ, श्री-जीव-चरण ॥ १४५॥
निज-शिरे धरि' एई सबार चरण ।
याहा हैते हय सब वाञ्छित-पूरण ॥ १४६॥

श्री-कृष्ण-चैतन्य, श्री-युत नित्यानन्द ।
श्री-अद्वैत-आचार्य, श्री-गौर-भक्त-वृन्द ॥ १४४॥

श्री-स्वरूप, श्री-रूप, श्री-सनातन ।
श्री-गुरु श्री-रघुनाथ, श्री-जीव-चरण ॥ १४५ ॥
निज-शिरे धरि' एइ सबार चरण ।
याहा हैते हय सब वाञ्छित-पूरण ॥ १४६ ॥

श्री-कृष्ण-चैतन्य—श्री चैतन्य महाप्रभु; **श्री-युत नित्यानन्द**—भगवान् नित्यानन्द; **श्री-अद्वैत-आचार्य्य**—श्री अद्वैत प्रभु; **श्री-गौर-भक्त-वृन्द**—श्री चैतन्य महाप्रभु के भक्त; **श्री-स्वरूप**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **श्री-रूप**—श्री रूप गोस्वामी; **श्री-सनातन**—श्रील सनातन गोस्वामी; **श्री-गुरु**—श्री गुरु; **श्री-रघुनाथ**—रघुनाथ दास गोस्वामी; **श्री-जीव-चरण**—श्रील जीव गोस्वामी के चरणकमल; **निज-शिरे धरि'**—मेरे सिर पर धारण करके; **एइ सबार चरण**—उन सबके चरणकमल; **याहा हैते**—जिससे; **हय**—होगी; **सब**—सर्व; **वाञ्छित-पूरण**—इच्छाओं की पूर्ति।

अनुवाद

मैं श्री चैतन्य महाप्रभु, श्री नित्यानन्द प्रभु, श्री अद्वैत आचार्य तथा उनके भक्त, एवं श्री स्वरूप दामोदर गोस्वामी, श्री रूप गोस्वामी, श्री सनातन गोस्वामी, अपने गुरु श्री रघुनाथ दास गोस्वामी तथा श्रील जीव गोस्वामी—इन सारे पुरुषों के चरणकमलों को अपने सिर पर धारण करता हूँ, जिससे मेरी इच्छाएँ पूरी हो सकें।

तात्पर्य

श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी कृष्णदास कविराज गोस्वामी के शिक्षा-गुरु थे, इसीलिए *श्रीगुरु* के रूप में उनका वर्णन हुआ है।

সবার চরণ-কৃপা—'গুরু উপাধ্যায়ী' ।
মোর বাণী—শিষ্যা, তারে বহুত নাচাই ॥ ১৪৭ ॥

সবার চরণ-কৃপা—'গুরু উপাধ্যায়ী' ।
মোর বাণী—শিষ্যা, তারে বহুত নাচাই ॥ ১৪৭ ॥

सबार—उन सब के; **चरण-कृपा**—चरणकमलों की कृपा; **गुरु उपाध्यायी**—मेरे वैदिक गुरु; **मोर वाणी**—मेरे शब्द; **शिष्या**—शिष्य; **तारे**—उनको; **बहुत नाचाइ**—मैंने अनेक प्रकार से नचाया।

अनुवाद

उनके चरणकमलों की कृपा ही मेरा गुरु है और मेरे शब्द मेरे शिष्यों के रूप में हैं, जिन्हें मैंने अनेक प्रकार से नचाया है।

तात्पर्य

उपाध्यायी या *उपाध्याय* उसका द्योतक है, जो पास जाने पर शिक्षा देता है (*उपेत्य अधीयते अस्मात्*)। *मनु-संहिता* में कहा गया है :

एकदेशं तु वेदस्य वेदाङ्गान्यपि वा पुनः।
योऽध्यापयति वृत्त्यर्थम् उपाध्यायः स उच्यते॥

"जो व्यक्ति अन्यों को वेद या वेदांग की शिक्षा देता है, वह उपाध्याय कहलाता है।" कला सिखाने वाले को भी उपाध्याय कहते हैं।

शिष्यार श्रम देखि' गुरु नाचान राखिला ।
'कृपा' ना नाचाय, 'वाणी' वसिया रहिला ॥ १४८॥

शिष्यार श्रम देखि' गुरु नाचान राखिला ।
'कृपा' ना नाचाय, 'वाणी' वसिया रहिला ॥ १४८॥

शिष्यार—शिष्यों की; **श्रम**—थकान; **देखि'**—देखकर; **गुरु**—गुरु; **नाचान राखिला**—नचाना बन्द किया; **कृपा**—कृपा; **ना नाचाय**—नहीं नचाती; **वाणी**—वाणी; **वसिया**—बैठकर; **रहिला**—मौन हो गई है।

अनुवाद

शिष्यों की थकान देखकर गुरु ने उन्हें नचाना बन्द कर दिया है और चूँकि वह कृपा अब उन्हें आगे नहीं नचा सकती, इसलिए मेरे शब्द मौन होकर बैठ रहे हैं।

अनिपुणा वाणी आपने नाचिते ना जाने ।
यत नाचाइला, नाचि' करिला विश्रामे ॥ १४९॥

अनिपुणा वाणी आपने नाचिते ना जाने ।
यत नाचाइला, नाचि' करिला विश्रामे ॥ १४९॥

अनिपुणा वाणी—अनुभवहीन शब्द; **आपने**—अपने आप; **नाचिते**—नाचना; **ना**—

नहीं; **जाने**—जानते; **यत**—जो भी; **नाचाइला**—नचाया; **नाचि'**—नाचने के बाद; **करिला विश्रामे**—विश्राम लिया।

अनुवाद

मेरे अनुभवहीन शब्द अपने आपसे नाचना नहीं जानते। गुरु की कृपा ने यथासम्भव उन्हें नचाया और अब नाच चुकने के बाद उन्होंने विश्राम ले लिया है।

सब श्रोता-गणेर करि चरण वन्दन ।
याँ-सबार चरण-कृपा—शुभेर कारण ॥ १५० ॥

सब श्रोता-गणेर करि चरण वन्दन ।
याँ-सबार चरण-कृपा—शुभेर कारण ॥ १५० ॥

सब—सब; **श्रोता-गणेर**—पाठकों के; **करि**—मैं करता हूँ; **चरण वन्दन**—चरणकमलों की वन्दना; **याँ-सबार**—जिन सब के; **चरण-कृपा**—चरणकमलों की कृपा से; **शुभेर कारण**—सर्व सौभाग्य का कारण।

अनुवाद

अब मैं अपने समस्त पाठकों के चरणकमलों की वन्दना करता हूँ, क्योंकि उन सबों के चरणकमलों की कृपा से सर्व सौभाग्य का उदय होता है।

चैतन्य-चरितामृत येइ जन शुने ।
ताँर चरण धुञा करौं मुञि पाने ॥ १५१ ॥

चैतन्य-चरितामृत येइ जन शुने ।
ताँर चरण धुञा करों मुञि पाने ॥ १५१ ॥

चैतन्य-चरितामृत—श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं का वर्णन; **येइ जन शुने**—जो को सुनता है; **ताँर चरण**—उसके चरणकमलों को; **धुञा**—धोकर; **करों**—करता हूँ; **मुञि**—मैं; **पाने**—पान।

अनुवाद

यदि कोई व्यक्ति श्री चैतन्य-चरितामृत में वर्णित श्री चैतन्य महाप्रभु

की लीलाओं को सुनता है, तो मैं उसके चरणकमल धोकर उस जल का पान करता हूँ।

श्रोतार पद-रेणु करौं मस्तक-भूषण ।
तोमरा ए-अमृत पिले सफल हैल श्रम ॥ १५२॥

श्रोतार पद-रेणु करों मस्तक-भूषण ।
तोमरा ए-अमृत पिले सफल हैल श्रम ॥ १५२॥

श्रोतार—श्रोताओं के; **पद-रेणु**—चरणकमलों की धूल; **करों**—मैं करता हूँ; **मस्तक-भूषण**—मेरा सिर अलंकृत; **तोमरा**—आप सब; **ए-अमृत**—इस अमृत का; **पिले**—पान किया है; **स-फल**—सफल; **हैल**—हो गया है; **श्रम**—मेरा परिश्रम।

अनुवाद

मैं अपने श्रोताओं के चरणकमलों की धूल से अपने सिर को अलंकृत करता हूँ। चूँकि आप सब इस अमृत का पान कर चुके हैं, इसलिए मेरा परिश्रम सफल है।

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ १५३॥

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ १५३॥

श्री-रूप—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—के चरणकमलों में; **यार**—जिसकी; **आश**—आशा; **चैतन्य-चरितामृत**—*चैतन्य चरितामृत* नामक ग्रन्थ; **कहे**—वर्णन करते हैं; **कृष्णदास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों की वन्दना करते हुए तथा सदैव उनकी कृपा की कामना करते हुए उनके चरणचिह्नों पर चलकर मैं कृष्णदास श्री चैतन्य-चरितामृत का वर्णन कर रहा हूँ।

चरितममृतमेतच्छ्रील-चैतन्य-विष्णोः
शुभ-दमशुभ-नाशि श्रद्धयास्वादयेद् यः ।

तदमल-पद-पद्मे भृङ्गतामेत्य सोऽयं
रसयति रसमुच्चैः प्रेम-माध्वीक-पूरम् ॥ १५४॥

चरितम्—चरित्र तथा कार्य; **अमृतम्**—अमृतमय; **एतत्**—यह; **श्रील**—सर्वाधिक ऐश्वर्यमय; **चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **विष्णोः**—उनका जो स्वयं पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् विष्णु हैं; **शुभ-दम्**—सौभाग्य प्रदान करने वाला; **अशुभ-नाशि**—समस्त अशुभ का नाश करने वाला; **श्रद्धया**—श्रद्धा तथा प्रेम के साथ; **आस्वादयेत्**—आस्वादन करना चाहिए; **यः**—जो कोई; **तत्-अमल-पद-पद्मे**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के निष्कलंक चरणकमलों में; **भृङ्गताम् एत्य**—भौंरे के समान बनकर; **सः**—वह व्यक्ति; **अयम्**—यह; **रसयति**—आस्वादन करता है; **रसम्**—दिव्य रस; **उच्चैः**—बड़ी मात्रा में; **प्रेम-माध्वीक**—प्रेमावेश रूपी मधु; **पूरम्**—पूर्ण।

अनुवाद

'श्री चैतन्य चरितामृत' पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु के कार्यकलापों से भरा है। यह समस्त सौभाग्य को लाने वाला है और सारी अशुभ वस्तुओं को विनष्ट करने वाला है। यदि कोई व्यक्ति श्रद्धा तथा प्रेमपूर्वक चैतन्य चरितामृत के अमृत का आस्वादन करता है, तो मैं उसके चरणकमलों से दिव्य प्रेम रूप मधु का आस्वादन करने वाला भौंरा बन जाता हूँ।

श्रीमन्मदन-गोपाल-गोविन्ददेव तुष्टये ।
चैतन्यार्पितमस्त्वेतच्चैतन्य-चरितामृतम् ॥ १५५॥

श्रीमत्—सर्वथा सुन्दर; **मदन-गोपाल**—मदनमोहन विग्रह के; **गोविन्द-देव**—वृन्दावन में श्री गोविन्ददेव विग्रह के; **तुष्टये**—सन्तोष के लिए; **चैतन्य-अर्पितम्**—श्री चैतन्य महाप्रभु को अर्पित; **अस्तु**—हो; **एतत्**—यह ग्रन्थ; **चैतन्य-चरितामृतम्**—श्री चैतन्य महाप्रभु की अमृतमयी लीलाओं से युक्त।

अनुवाद

चूँकि अब यह चैतन्य-चरितामृत ग्रन्थ पूर्ण है, जो अत्यन्त ऐश्वर्यवान मदनमोहन जी तथा गोविन्द जी के अर्चाविग्रहों की तुष्टि के हेतु लिखा गया है, इसे मैं श्रीकृष्ण चैतन्य के चरणकमलों पर अर्पित करता हूँ।

পরিমল-বাসিত-ভুবনং
স্ব-রসোন্মাদিত-রসজ্ঞ-রোলম্বম্ ।
গিরিধর-চরণাম্ভোজং
কঃ খলু রসিকঃ সমীহতে হাতুম্ ॥১৫৬॥

परिमल-वासित-भुवनं
स्व-रसोन्मादित-रसज्ञ-रोलम्बम् ।
गिरिधर-चरणाम्भोजं
कः खलु रसिकः समीहते हातुम् ॥ १५६ ॥

परिमल—सुगन्ध से; **वासित**—सुरभित हो रहा है; **भुवनम्**—सारा जगत्; **स्व-रस-उन्मादित**—अपने ही रसों से प्रेरित; **रस-ज्ञ**—भक्तगण; **रोलम्बम्**—भौरों के तुल्य; **गिरिधर-चरण-अम्भोजम्**—भगवान् गिरीधारी के चरणकमल; **कः**—जो; **खलु**—निश्चय ही; **रसिकः**—स्वरूपसिद्ध आत्मा; **समीहते हातुम्**—छोड़ने का प्रयास करेगा।

अनुवाद

स्वरूपसिद्ध (रसज्ञ) भक्तगण उन भौरों के तुल्य हैं, जो कृष्ण के चरणकमलों पर अपने ही रस से उन्मत्त हो चुके हैं। उन चरणकमलों की सुगन्ध सारे जगत् को सुरभित कर रही है। भला ऐसा कौन स्वरूपसिद्ध (रसिक) है, जो उनको छोड़ना चाहेगा?

শাকে সিন্ধ্বগ্নি-বাণেন্দৌ জ্যৈষ্ঠে বৃন্দাবনান্তরে ।
সূর্যাহেঽসিত-পঞ্চম্যাং গ্রন্থোঽয়ং পূর্ণতাং গতঃ ॥১৫৭॥

शाके सिन्ध्वग्नि-वाणेन्दौ ज्यैष्ठे वृन्दावनान्तरे ।
सूर्याहेऽसित-पञ्चम्यां ग्रन्थोऽयं पूर्णतां गतः ॥ १५७ ॥

शाके—शक सम्वत् में; **सिन्धु-अग्नि-वाण-इन्दौ**—१५३७ में; **ज्यैष्ठे**—ज्येष्ठ (मई-जून) मास में; **वृन्दावन-अन्तरे**—वृन्दावन में; **सूर्य-अहे**—रविवार के दिन; **असित-**

पञ्चम्याम्—कृष्णपक्ष की पंचमी को; **ग्रन्थः**—ग्रन्थ; **अयम्**—यह (*चैतन्य-चरितामृत*); **पूर्णताम्**—पूरा; **गतः**—हुआ।

अनुवाद

शक सम्वत् १५३७ के ज्येष्ठ मास (सन् १६१५ ईस्वी के मई-जून) में रविवार के दिन कृष्णपक्ष की पंचमी को यह चैतन्य-चरितामृत वृन्दावन में पूरा हुआ।

इस प्रकार श्रीचैतन्य-चरितामृत अन्त्य लीला के अन्तर्गत शिक्षाष्टक शीर्षक बीसवें अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ।

अन्त्य लीला समाप्त